गंगा माँ की पुकार

इन्द्र प्रसाद 'अकेला'

(गंगा-दोहावली)



गंगा एक्शन परिवार

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश, हिमालय के सौजन्य से

गंगा माँ की पुकार

(गंगा–दोहावली)

इन्द्र प्रसाद 'अकेला'



मोरपंख प्रकाशन
49–ए, न्यू फ्रेण्ड्स कॉलोनी, रुड़की रोड, मेरठ (उ०प्र०)
मोबाइल–08650620914 ई–मेलः kumarpankajkavi@yahoo.com

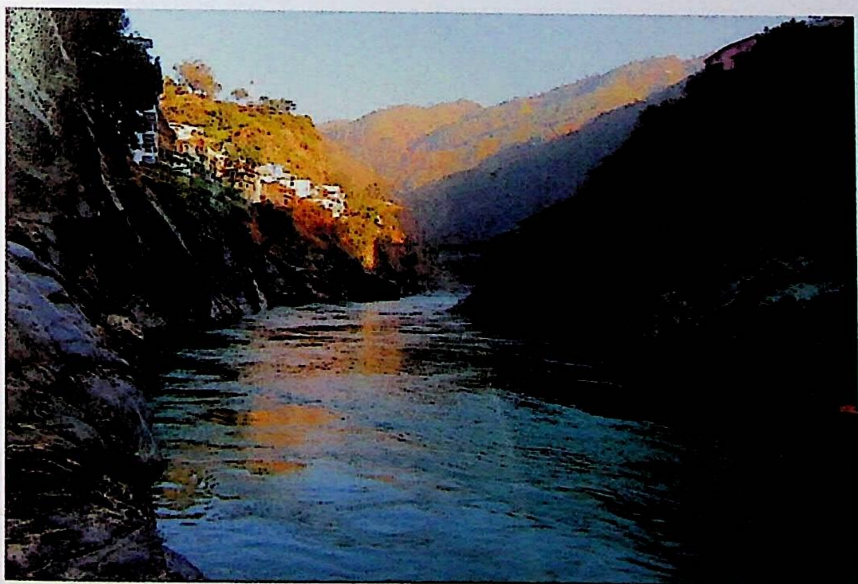
ISBN- 978-81-923096-0-6

गंगा माँ की पुकार (गंगा–सतसई)

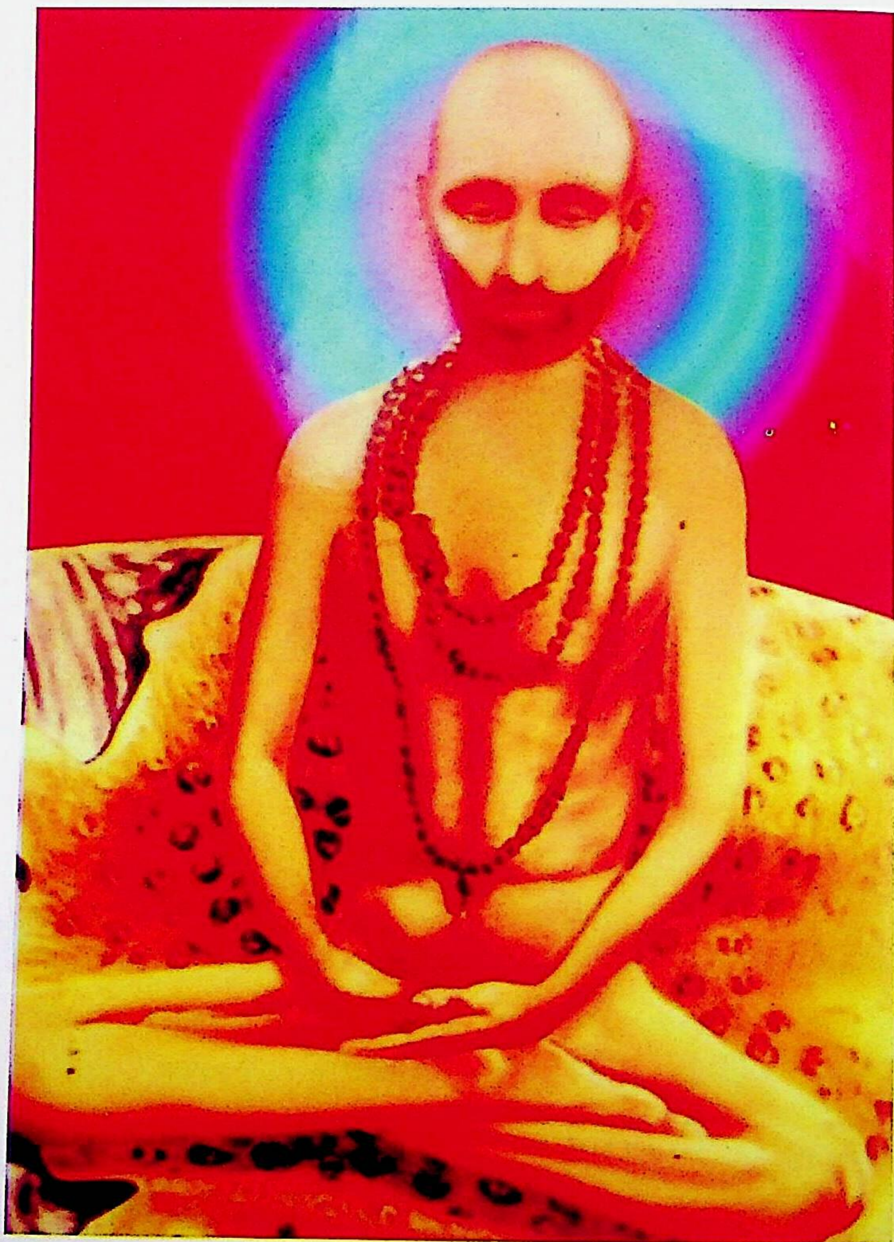
साज–सज्जा : कुमार पंकज
प्रकाशन : मोरपंख प्रकाशन–49–ए, न्यू फ्रेण्ड्स कॉलोनी, मेरठ (उ.प्र.)
मुद्रक : नेशनल ऑफ़सेट प्रिन्टर्स, मेरठ (उ०प्र०)
प्रथम संस्करण : 2012
सहयोग–राशि : 100/– रुपया मात्र

Ganga Maa Ki Pukar -By Indraprasad 'Akela'

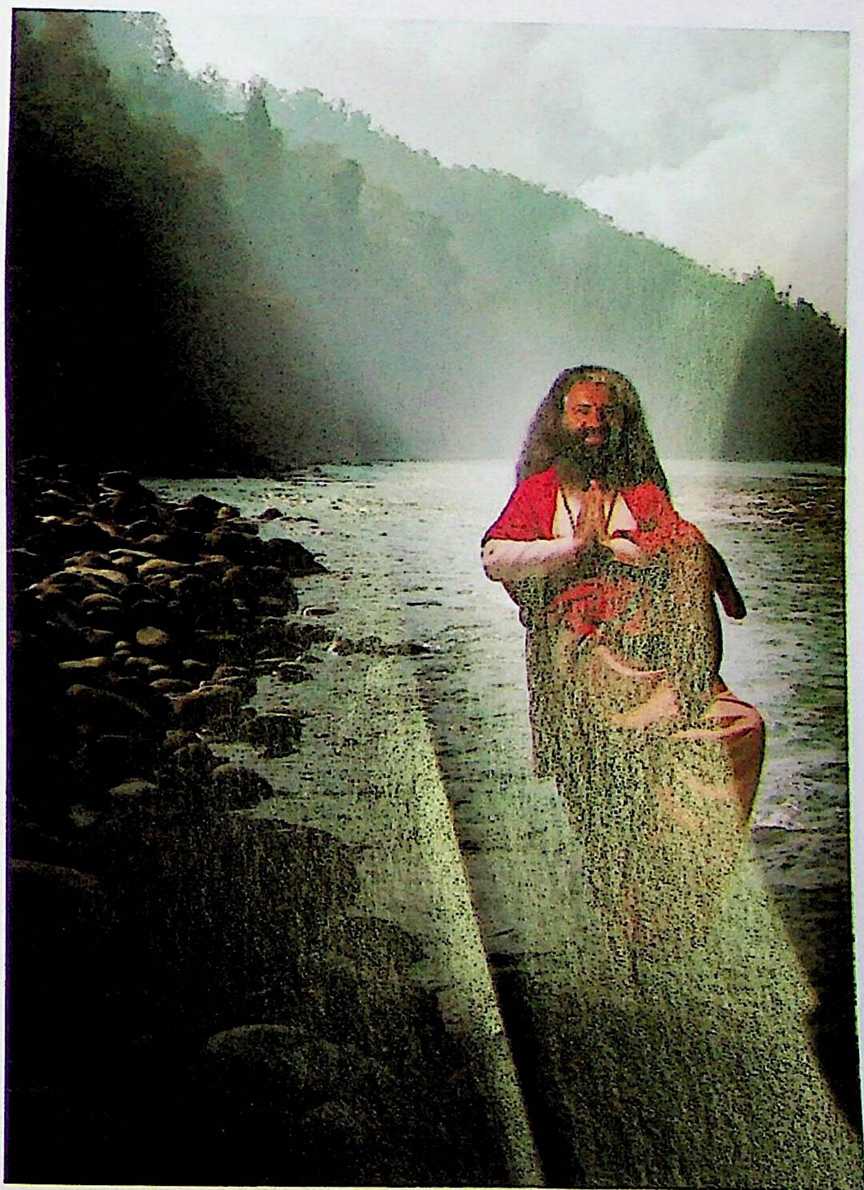
गंगा मइया को समर्पित



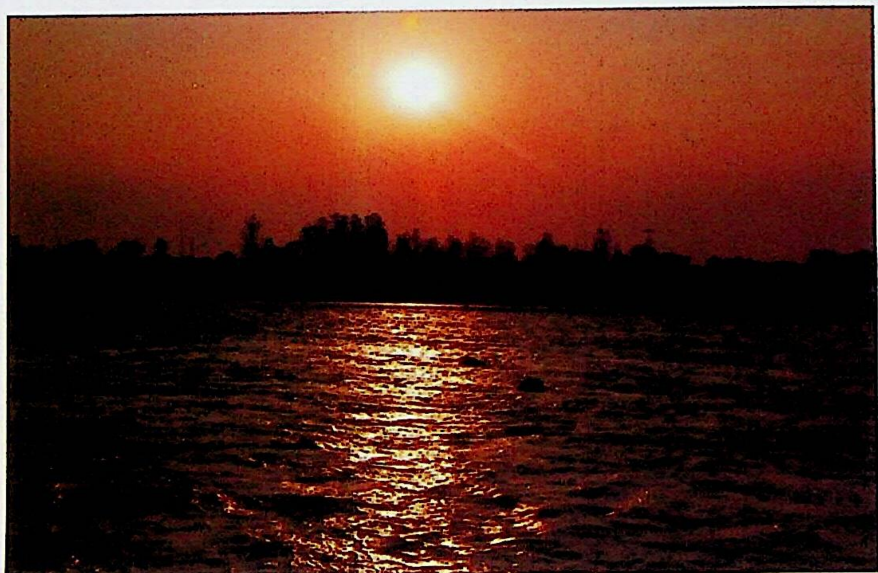
देवलोक से आ गई, गंगा देवप्रयाग।
धरती माँ के देखिए, भाग्य गए हैं जाग।



श्री श्री 100008 श्री परमपूज्य (ब्रह्मलीन)
स्वामी श्वासानन्द जी महाराज–वाराणसी



परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज
गंगा मइया की आराधना में लीन



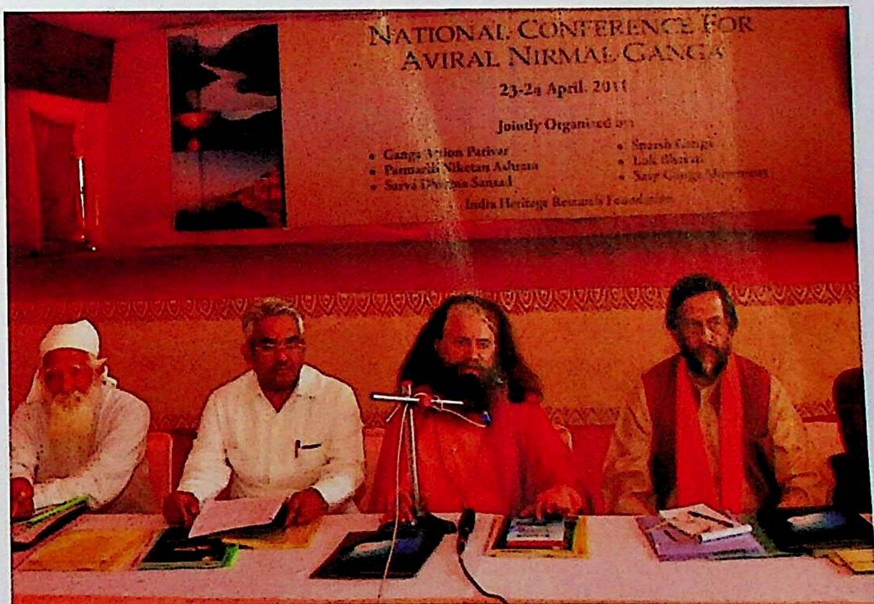
सूर्योदय के समय गंगा मइया का विहंगम दृश्य



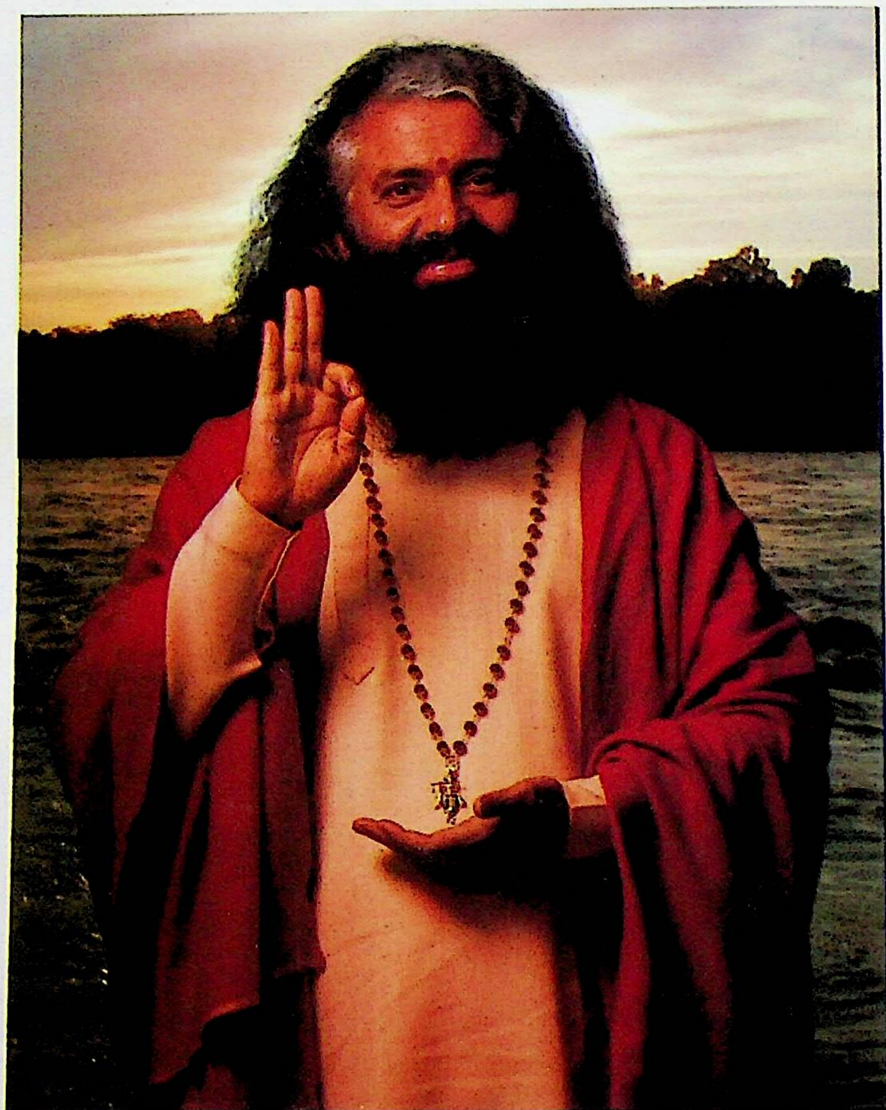
सूर्यास्त के समय गंगा मइया का विहंगम दृश्य



'स्पर्श गंगा' आयोजन के अवसर पर शंखनाद करते
परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज



'अविरल, निर्मल गंगा' अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में विचार व्यक्त करते
परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज



परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज

स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज
मुनि श्री के सम्मान में

आप दिशा–दर्शक, सचेतक, विश्व–दर्शन के हो ज्ञानी।
घोर तम की पूर्ण इति हो, उदित रवि से स्वाभिमानी।।

तर्क से मधुपर्क लेकर, आज जन–जन को दिया है।
ज्ञान का सौरभ लुटा, अज्ञानता को पी लिया है।।

मुनिवर समन्वय स्रोत हैं, जो आज को कल से मिलाते।
आप जैसी 'युग–विभूति', विधाता भी कम बनाते।।

आपके सान्निध्य से ही, गंगातट अब खिल रहा है।
निकेतन परमार्थ का भी, जाह्नवी से मिल रहा है।।

जाह्नवी की सुरक्षा का, आपने जो व्रत लिया है।
पूर्ण भारत वर्ष पर उपकार ये मुनिवर किया है।।

एक दिन साकार होगा, स्वप्न जो देखा है सुखकर।
धर्म–ध्वजा लहराएगी, चहुँ ओर निश्चित हे ऋषिवर।।

मंत्र, गंगा की सुरक्षा, का सभी को याद होगा।
विश्व में गूँजेगी वाणी, आपका जयनाद होगा।।

गंगा तट ऋषिकेश पर मुनिश्री, आपकी छाया सघन है।
दीजिए आशीष सबको, आपको शत–शत नमन है।।

गंगा माँ की पाती

मेरे प्रिय,

आशा है कि आप सब कुशलपूर्वक होंगे। मेरा स्वास्थ्य तो दिन प्रतिदिन नष्ट होता जा रहा है। पता नहीं भौतिकतावादी मायावी संस्कृति ने तुम्हारी आँखों पर विकास की ऐसी पट्टी कैसे चढ़ा दी कि तुम्हें भविष्य तो छोड़ो वर्तमान के दुर्दिन भी नजर नहीं आ रहे। याद करो 50-60 साल पुराने अपने बचपन को जब तुम हरे-भरे मैदानों में हिरणों के समान कुलाचें भरते थे। स्वच्छ निर्मल जल धाराओं में राजहंस के साथ तैरा करते थे। बिना कीट-नाशकों की सब्जी, अन्न-जल से भरण-पोषाण करते थे। वह बात और है कि तुम्हारा जीवन नदी की मंथर शान्त गति के साथ चलता रहता था। लेकिन तुमने तो बाज की उड़ान और अश्व की गति को पछाड़ने की ठान ली थी। ठीक है बेटा! बदलते युग के साथ कदमताल मिलाना जरूरी है। वरना आदमी औरों से पीछे रह जाता है। इसलिए अपने विकास के लिए तुमने मुझसे जो-जो माँगा, मैंने अपने सगे-सम्बन्धियों के सहयोग से खुले हाथ से दिया। तुमने मेरी और मेरी बहनों (यमुना, सरयू, गोमती, नर्मदा, कावेरी आदि) की मुख्य धाराओं से नहरें निकाल लीं। हमने खुशी-खुशी अपनी जलराशि उन्मुक्त मन से दी, पर तुम तो लालची निकले। दुनिया के किसी भी देश में 25 प्रतिशत से ज्यादा जल को मुख्य धारा से अलग न करने का प्रावधान है, तुमने किया! कहीं-कहीं तो यह दोहन 90 प्रतिशत तक है, वरना अपरिमित जल हथिनीकुंड बैराज में रोक कर तुम मेरी बहिन यमुना को पानीपत में सिसक-सिसक कर मरने के लिए नहीं छोड़ देते।

तुम कह सकते हो कि बचे हुए जल को तुम सीवर में डालकर वापस करते हो। ऊँचे-बड़े बाँध और सीवर यही तो हमें मुख्य रूप से नष्ट कर रहे हैं। मैं यह नहीं कहती - जो हुआ उसे अभी लौटा दो। बने हुए बाँधों को तोड़ा नहीं जा सकता तो कोई बात नहीं, फिलहाल नये बाँधों का निर्माण तो रोक सकते हो। यदि यह भी नहीं कर सकते तो स्वयं के लिए संकल्प ले सकते हो कि - मैं किसी भी जलधारा में आजीवन किसी भी प्रकार की गन्दगी नहीं फैलाऊँगा। कोई मूर्ति, फल-फूल, कचरा, पॉलीथिन जल में विसर्जित नहीं करूँगा।

यदि तुम कल कारखाना चलाते हो तो दूषित जल को रिसाइकिल

कराने का प्रण करो, भले ही तुम्हारा लाभांश कम हो जाये। ऐसा करने से हजारों प्राणी अस्वस्थ होने से लेकर कैंसर जैसी महामारियों से बच सकेंगे। यदि किसान हो तो जैविक खेती करो। सिंचाई के आधुनिक तौर-तरीके अपनाओ, जिससे पानी की बर्बादी रुक सके। यदि नौकरी पेशा हो तो भी मुझे स्वच्छ बनाने के लिए प्रयास करो। कहने का तात्पर्य यह है कि तुम चाहे जिस भी क्षेत्र में कार्यरत हो अपनी ज़िम्मेदारी निभाओगे। इस शहरी समाज को सीवर शून्य बनाने में योगदान दोगे।

कैसे....? अरे, बेटा बहुत आसान है। जब भी खरीददारी के लिए बाहर जाओ, कपड़े का थैला, बर्तन साथ ले जाओ, ताकि पॉलीथिन न लेनी पड़े। घर यदि बहुमंजिला है तो ऊपर की मंजिल के नहाने-धोने का पानी नीचे की मंजिल के 'फ्लश सिस्टम' से जोड़ दो। जानते हो एक बार फ्लश करने में तुम बीस लीटर स्वच्छ जल व्यर्थ करते हो। क्या तुम प्रयुक्त जल का सदुपयोग कर स्वच्छ जल नहीं बचा सकते? बिजली का अनावश्यक उपयोग न करो। ए. सी. चला कर भरी गर्मी में रजाई मत ओढ़ो। फल-सब्जी के छिलकों को पशुओं के चारे में डाल दो, अन्यथा पास की भूमि में गड्ढा बना कर खाद बनाओ। जो लोग जलधाराओं के किनारों को अवैध तरीके से किसी भी रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं, उनका विरोध करो। जलधाराओं के किनारों पर जल को स्वच्छ करने वाले पेड़-पौधों का रोपण करो। हर माह दो पेड़ लगाओ और उनका संरक्षण करो। हमारे जलीय जीव-जंतुओं को लुप्त होने से बचाओ। इन उपायों को अपना कर पर्यावरण के मित्र बनो और सोचो कि तुम मेरे लिए - समयदान, श्रमदान, प्रतिभादान, धनदान, उद्यमदान आदि में से क्या दान कर सकते हो?

याद रखना यदि अब भी समय रहते नहीं चेते तो तुमने बचपन की स्वस्थ माँ को तो जर्जर होते देख लिया, तुम्हारी आने वाली पीढ़ी शायद हमें देख भी न पाये। ज्यादा विस्तार से क्या कहूँ, फिर भी कुछ प्रश्न तुम्हारे मन में उठ रहे हों तो गंगा एक्शन परिवार के अपने भाई-बहिनों से मेरे बारे में पूछ लेना। चिंतन-मनन करना, और 'गंगा माँ की पुकार' काव्यकृति को पढ़ना।

अनन्त शुभकामनाओं के साथ

तुम्हारी माँ गंगा

गंगा एक्शन परिवार (जी.ए.पी.)

गंगा एक्शन परिवार क्या है: 'नद्या: जगतस्य मातर:' 'नदियाँ विश्व की माँ हैं' क्योंकि न केवल मनुष्य बल्कि सृष्टि-रचना का प्रत्येक प्राणी, वनस्पति उससे अपना जीवन पाती है। 'गंगा एक्शन परिवार' माँ गंगा की सेवा में समर्पित एक विश्व परिवार है। इस परिवार का लक्ष्य माँ गंगा और इसके परिवार के अन्य सदस्य यथा- नदी, नाला, झरना, झील, तालाब इत्यादि के जल को निर्मल, निर्बाध एवं अविरल प्रवाहमय बनाने में अपना योगदान देना है। इस पुनीत कार्य के लिए देश-विदेश से अनेक भारतवंशी, वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्, पूज्य संत, कवि, लेखक, पत्रकार, कलाकार, नेता, अभिनेता, पूर्व सरकारी अधिकारी एवं सांस्कृतिक विचारधाराओं के लोग इस परिवार से जुड़कर अपने-आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। सभी लोग माँ गंगा की मोक्षप्रदायिनी जलधारा को प्रदूषण मुक्त कराने में अपना योगदान कर रहे हैं। गैप की शुरूआत करने की प्रेरणा परमपूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज ने की, परन्तु इसकी मुखिया माँ गंगा हैं और हम सब हैं उसके सेवक।

कौन है-'गंगा एक्शन परिवार' के प्रणेता: 'गंगा एक्शन परिवार' (जी.ए.पी.) की स्थापना परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रेरणा से हुई। इस परिवार की मुखिया स्वयं माँ गंगा जी हैं। पूज्य महाराज श्री, अपने आध्यात्मिक जीवन-दर्शन, शाकाहार आन्दोलन आदि के लिए देश-विदेश में विख्यात हैं। वह एक गम्भीर चिन्तक, विचारक व समाज-सुधारक हैं। आपने गंगा माँ को प्रदूषण मुक्त कराने के लिए, एक अभियान चलाया, उसी को 'गंगा एक्शन परिवार' का नाम दिया गया है।

'गंगा एक्शन परिवार' की स्थापना: 'गंगा एक्शन परिवार' (जी.ए.पी.) की स्थापना दिनांक 4 अप्रैल, 2010 को 'स्पर्श गंगा' आयोजन के महान अवसर पर परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश में परम पूज्य दलाई लामा एवं अन्य परम पूज्य संतों के कर-कमलों द्वारा हुई। इस पवित्र अवसर पर अनेकों संतों, विशिष्ट महापुरुषों ने उपस्थित होकर आशीर्वाद दिया।

क्या है 'गंगा एक्शन परिवार' (जी.ए.पी.) की स्थापना का लक्ष्य: 'गंगा एक्शन परिवार' की स्थापना का लक्ष्य माँ गंगा-यमुना की निर्मल जलधारा को किसी भी तरह के प्रदूषण से मुक्त कराना है। साथ ही साथ भारत राष्ट्र की इस अमूल्य धारोहर के सांस्कृतिक इतिहास को जीवन्त बनाना है। माँ गंगा, भारत वैभवशाली अतीत के इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, आध्यात्म, दर्शन, कला, साहित्य एवं भारतीयों के पौरुष की मूकदर्शक है। 'गंगा एक्शन परिवार' गंगा के तट पर विकसित होने वाली संस्कृति के इतिहास को देश-विदेश के लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न संचार माध्यमों का उपयोग कर रहा है। समय-समय पर देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में शोधपरक लेख प्रकाशित हो रहे हैं। गंगा के महत्व को दर्शाने वाली फिल्मों एवं उसे प्रदूषण से मुक्त कराने के लिए किए जाने वाले प्रयासों का भी दिग्दर्शन कराया जा रहा है।

यह परिवार, सभी संस्थाओं से जुड़कर उन्हें, साथ लेकर, माँ गंगा के साथ-साथ इसकी अन्य बहनों- यमुना, सरयू, घाघरा, गोमती, नर्मदा, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, महानदी आदि नदियों और देश के सभी जलाशयों को प्रदूषणमुक्त कराने की मुहिम चला रहा है।

क्या है गंगा से सम्बन्धित समस्या: माँ गंगा के साथ आज जितना अन्याय हो रहा है शायद दुनिया की किसी भी नदी की जलधारा के साथ नहीं हुआ। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन की तुलना में भारत कहीं बहुत पीछे छूट गया है। आखिर क्या कारण है कि हम भारतीय जिस गंगा-जल को अपने जीवन की अंतिम बेला में मोक्ष का साधन मानते रहे हैं, आज उसी में, अपनी हर तरह की गंदगी प्रवाहित कर रहे हैं। आज माँ गंगा की अमृत-तुल्य जलधारा में मल-मूत्र, कूड़ा-कचरा, अधजले शव, मृत पशुओं को फेंककर कौन सा पुण्य अर्जित कर रहे हैं ? औद्योगिक अपशिष्ट (कूड़ा) और कारखानों का जहरीला पानी, गंगा में बहाया जा रहा है। महानगरों की सीवर लाइनें, नदी के जल को इस तरह प्रदूषित कर रही है कि पानी का स्पर्श करने में भी डर लगने लगा है। कुछ खास समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

स्वास्थ्य की समस्या: गंगाजल के प्रदूषण से इसके बेसिन में बसने वाली

विशाल आबादी के स्वास्थ्य की भीषण समस्याओं से होकर गुजरना पड़ रहा है। चिकित्सा विज्ञानियों के अनुसार जलजनित बीमारियों यथा- डायरिया, टायफाइड, हैपेटाइटिस, पीलिया, खसरा, आंत्रशोध, हैजा के कारण गंगा बेसिन में हर मिनट में एक व्यक्ति मौत का शिकार हो रहा है। डाक्टरों का कहना है कि हार्ट अटैक, टी0बी0, कैंसर, ये तीनों बड़ी बीमारियाँ मिलकर भी साल भर में जितने लोगों को नहीं मार सकतीं, उससे तीन गुना अधिक लोग हर साल केवल हैपेटाइटिस से हमारे देश में मर जाते हैं। यह एक जलजनित बीमारी है। जलजनित बीमारियों के कारण हमारे देश में लगभग 20 लाख बच्चे हर साल मौत के शिकार हो रहे हैं।

सीवेज की समस्याः गंगा की जलधारा को प्रदूषित करने वाली सबसे बड़ी समस्या इसके तट पर बसे हुए महानगरों के सीवेज की है- इनके जरिये प्रतिदिन लगभग 1.3 अरब लीटर पानी एवं मल-मूत्र गंगा की जलधारा में गिराया जा रहा है। यही नहीं, इसी के साथ औद्योगिक महानगरों का कूड़ा-कचरा, तेजाबी जल, जहरीले पदार्थ गंगा की धारा में प्रवाहित किये जा रहे हैं। अकेले कानपुर में ही 1,125 टन लीटर, सॉलिड क्रोमियम पानी, गंगा में बहाया जा रहा है जिससे किडनी एवं लीवर की जानलेवा बीमारी पैदा हो रही है। कानपुर ही नहीं इलाहाबाद, वाराणसी, पटना आदि महानगरों का गंदा पानी और कचरा गंगा में मिलकर प्रदूषण की समस्या पैदा कर रहा है।

क्या गंगा का अस्तित्व समाप्त हो जायेगाः यदि आज जैसा हाल रहा और हम माँ गंगा की अविरल धारा को बचाये रखने के लिए तैयार नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब गंगा और उसकी सहायक नदियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। अभी हाल में ही दुनिया की 900 नदियों के अध्ययन की रिपोर्ट में कहा गया है कि गंगा विश्व की उन नदियों में से एक है, जो तेजी के साथ विलुप्त होने की ओर बढ़ रही हैं। यह सही है कि गंगा और कई उसकी सहायक नदियों में तेजी के साथ जल की कमी होती जा रही है। यदि पर्यावरणविदों की यह भविष्यवाणी सही हुई तो भारत की लगभग एक तिहाई आबादी अन्न और पानी के अभाव में अकाल मौत के मुँह में समा जायेगी।

गंगोत्री के ग्लेशियर का तेजी के साथ पिघलना, अनावश्यक बाँध-बंधों का निर्माण, जंगलों का विनाश, पर्वत शिखरों का धराशायी होना, विश्व-तापमान में तेजी से वृद्धि आदि कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका समाधान ढूँढने की आज आवश्यकता है।

'गंगा एक्शन परिवार' गैप में शामिल होकर आप निम्नलिखित सहयोग कर सकते हैं:-

- प्रशासनिक सहयोग
- वैज्ञानिक शोध
- ठोस कचरा प्रबंधन
- प्रदूषित जल प्रबंधन
- ऊर्जा प्रबंधन
- कृषि प्रबंधन
- पर्यावरणीय प्रबंधन
- कानूनी सहयोग एवं सलाह
- मीडिया सम्बंधी सहयोग एवं सलाह (टी.वी., फिल्म, रेडियो)
- रचनात्मक सहयोग (फोटोग्राफी, आर्ट, कविता, लेख, पत्रकारिता आदि)
- भाषाई सहयोग
- ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग (फेसबुक, ट्विटर, यू-ट्यूब, ब्लागिंग इत्यादि)
- डिजाइनिंग
- वेब साइट का विस्तार और रख-रखाव
- इवेंट प्लानिंग और लोकल इवेंट
- स्थानीय व्यापार, स्कूल सम्बंधी सहयोग
- प्रचार अथवा अन्य किसी प्रकार का सहयोग

शपथ-पत्र

जय-जय गंगे, हर-हर गंगे

गंगा माँ, तुम अविरल, निर्मल बहती रहो।
अपने मन की पीड़ा जन-जन से कहती रहो।।

❖ गंगा मेरी माँ है, मेरी आस्था का केन्द्र है, राष्ट्रीय धरोहर है, विश्व-धरोहर है एवं प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति का पुण्य प्रवाह है।

❖ गंगा अविरल बहे, निर्मल रहे, जीवन्त रहे, इसके लिए मैं संकल्प लेती/लेता हूँ कि मैं............................(स्वयं का नाम) नीलकण्ठ यात्रा, काँवड़ यात्रा या अन्य दिवस यात्रा, कुम्भ और धार्मिक परम्पराएँ निभाते हुए अन्य समय में भी ऐसा कोई व्यवहार नहीं करूँगा/करूँगी, जिससे गंगा जी प्रदूषित हों जैसे-

१. गंदे कपड़े गंगा किनारे नहीं धोऊँगी/धोऊँगा।
२. प्लास्टिक, पॉलीथिन आदि को गंगा में नहीं डालूँगी/डालूँगा।
३. गंगा-तट पर डिटर्जेण्ट, साबुन आदि का प्रयोग नहीं करूँगी/करूँगा।
४. गंगा में मल-मूत्र का विसर्जन नहीं होने दूँगी/दूँगा।
५. गोमुख से गंगा-सागर तक, गंगा अविरल और निर्मल बहती रहे, इसके लिए जो भी प्रयास होंगे मैं उनमें सहभागी रहूँगी/रहूँगा।
६. मैं उपरांकित गंगा एक्शन परिवार, परमार्थ निकेतन ऋषिकेश को अपना सहयोग देने का संकल्प लेती हूँ/लेता हूँ-

(क) ....
(ख) ....
(ग) ....

हमारा यह भी प्रयास रहेगा कि हम जनसहयोग प्राप्त कर, गंगा के किनारे निर्मित किसी तट का सुदृढ़ीकरण व सौन्दर्यीकरण कराकर, वहाँ गंगा-आरती का श्रीगणेश कराएँगे। हर हर साल गंगा दशहरा का उत्सव गंगा एक्शन परिवार के साथ मिलकर मनाएँगे।

गंगा मैया का अनूठा वर्णन

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु जन आते-जाते रहते हैं। गंगा मैया की गोद में स्नान करते हैं। संध्याकाल में गंगा माँ की आरती में भक्त जन शामिल होते हैं और श्रद्धा, भक्ति धार कर चले जाते हैं। ऐसे कुछ ही भक्त जन होते हैं जो अपनी विशेष छाप छोड़ जाते हैं। ऐसे ही एक भक्त कवि महाकुंभ में परमार्थ निकेतन पधारे। संध्या कालीन आरती में शामिल हुए और विशेष भेंटवार्ता में तो कवि ने अपनी वाणी से हमें मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कुछ दोहे माँ गंगा पर सुनाए। उनका दोहा मुझे याद है-

माँ की शोभा के सदृश, मिलती नहीं मिसाल।
माँ गंगा का देखिए, उर है बड़ा विशाल।।

एक साधारण से दिखने वाले भक्त **कवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला'** असाधारण प्रतिभा के धनी निकले। मैंने तो उनसे गंगा पर एक माह में सौ दोहे रचने को कहा, लेकिन उन्होंने माँ गंगा पर पन्द्रह दिन में सात सौ से अधिक दोहे लिखकर हमें अभिभूत कर दिया। कवि 'अकेला' **राष्ट्र-कवि** क्या ? **विश्व-कवि** हो गये। हमें भर्तृहरि के 'नीति शतक' का श्लोक याद आ रहा है-

जयन्ति ते सुकृतिनो रस सिद्धाः कविश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं मयम्।।

अर्थ है- सभी रस वर्णन में निपुण, श्रेष्ठ कर्म वाले व पुण्यवान महाकवि ही सर्वश्रेष्ठ एवं सदा विज़यी हैं। जिनके यशस्वी शरीर को न बुढ़ापे का भय है और न ही मृत्यु का भय होता है।

कवि 'अकेला' जी ने विभिन्न विधाओं में साहित्य की रचना की है। छन्द, मुक्तक, दोहा, गीत, तुकान्त, अतुकान्त सभी विधाओं में 'अकेला' जी ने रचनाएँ रची हैं। आपकी चार काव्य-कृतियाँ 'एक पहेली भारत माँ', 'हुँकार', 'हँसी के रंग अकेला के संग' और 'हास्य की फुलझड़ियाँ' साहित्य-जगत में अपना स्थान बना चुकी हैं। चारों काव्य-कृतियों के दो-तीन संस्करण आ चुके हैं। गंगा मैया पर पाँचवी काव्य-कृति **'गंगा माँ की पुकार'** रचकर कवि ने साहित्य-जगत क्या, धार्मिक-जगत को साधारण शब्दों में बहुत महत्वपूर्ण धरोहर सौंप दी है। एक-एक शब्द, माँ गंगा का अभिषेक कर

रहा है। निश्छल प्रेमभाव से भरा मन, वाणी में मृदुलता, कुशल व्यवहारिकता कवि के आभूषण नजर आते हैं। मैं हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ उनकी अद्वितीय काव्य-कृति 'गंगा माँ की पुकार' के लिए।

परमार्थ निकेतन कवि 'अकेला' का अपना--सा हो गया। उनके दोहे सुने गए, पढ़े गए तो लगा कि 'गंगा बचाओ अभियान' को और बल मिल गया। मेरा शुभाशीष आशीर्वचन भक्त कवि के लिए सदैव बना रहेगा। उनके द्वारा रचित काव्यकृति 'गंगा माँ की पुकार' का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद कराकर प्रसारित किया जाएगा और अनेक धार्मिक संगठनों, आश्रमों को 'गंगा माँ की पुकार' भेंट की जाएगी जिससे गंगा को बचाने में जन-जन की भागीदारी हो सके। उन्होंने जो 'माँ गंगा को शब्दों में वर्णित किया है, यह कोई पूर्वजन्म का भक्तिभाव, साधना, तप, त्याग का प्रतिफल उन्हें मिला है। संत हृदय श्री अकेला जी बस व्यस्त रहें, मस्त और सदा स्वस्थ रहें।

स्वामी चिदानन्द सरस्वती
अध्यक्ष,
परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश,
(हिमालय) भारत

गंगा माँ की पुकार


डॉ० कैलाशपति गौड

गंगा मैया सदियों से जन-जन की जीवन-दायिनी रही है। पतित-पावनी गंगा माँ ने असंख्य लोगों को शीतल गंगाजल दिया, मानों जीव-जन्तुओं को जीवन-यापन का सहारा दिया। परन्तु वर्तमान में हमने अपने आप अपने पैरो पर कुल्हाड़ी मार ली है और गंगा मैया को दूषित कर दिया। आज स्थिति ऐसी है कि माँ गंगा विलुप्त होने के कगार पर है। 'गंगा एक्शन परिवार' परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज के संरक्षण में गंगा को बचाने का भगीरथ प्रयास कर रहा है।

ऐसे समय में राष्ट्रीय कवि **श्री इन्द्रप्रसाद 'अकेला'** जी द्वारा रचित काव्य-ग्रन्थ 'गंगा माँ की पुकार' (गंगा सतसई) रूप में आ रहा है।?कवि 'अकेला' जी को परमार्थ निकेतन तक पहुँचने का कार्य श्री श्री 100008 श्री परमपूज्य स्वामी श्वासानन्द जी महाराज (वाराणसी) की दिव्य शक्ति ने किया और परमूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती मुनि जी महाराज के आशीर्वाद से इस कार्य का शुभारम्भ हुआ।

गंगा माँ के इस पुनीत कार्य में परमपूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज का स्नेह भाव, अपनत्व-भाव और आर्थिक सहयोग रहा। तभी गंगा माँ की पुकार (काव्य-कृति) का कार्य सम्भव हो पाया। गंगा मैया को बचाने में कवि 'अकेला' द्वारा रचित दोहे सहायक सिद्ध होगें। मैंने कवि श्री अकेला जी के दोहे पढ़े और समझे, चिन्तन किया और साधारण भाषा में, गुरुवर के शुभाशीष व माँ शारदे की कृपा से जो कार्य हुआ है, समाज उसे सदियों तक याद करेगा। **मैं अपने आपको धन्य मानता हूँ कि महाकुम्भ के अवसर पर मैंने परम पूजनीय मुनि जी से श्री अकेला जी को आशीष देने का आग्रह कर उक्त ग्रन्थ की रचना करने का आशीर्वाद माँगा था, जो परम पूज्य श्री चिदानन्द स्वामी मुनि जी ने मुझे आश्वस्त कर यह कार्य करने की कृपा की।**

कोटि शुभकामनाओं सहित।

डॉ० कैलाशपति गौड
मुरादनगर
जिला-ग़ाज़ियाबाद (उ० प्र०)

कवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला' की ''गंगा माँ की पुकार' हम सभी की पुकार बने



डॉ0 कुँअर बेचैन

अनंतकाल से भारतवर्ष में ही नहीं, वरन् पूरे संसार में गंगा नदी की ख्याति एक पावन नदी के रूप में है। भारत में तो इसे गंगा मइया कहकर माँ का स्थान दिया गया है। ब्रह्मा के कमण्डल से निकली, शिव की जटाओं में समाहित गंगा, भगीरथ के भगीरथ प्रयास के कारण भागीरथी नाम से भी सुशोभित है। गंगा केवल नदी ही नहीं, हमारी भारतीय संस्कृति की विशद् एवं महत्वपूर्ण परम्परा की परिचायक है। वैसे भी हमारा देश नदियों के रूप में मिली प्राकृतिक विरासत का देश है। हमारे देश की संस्कृति भी नदियों के किनारे ही पुष्पित एवं पल्लवित हुई है। गंगा का पावन जल हमारे जीवन की साँस-साँस का आराध्य रहा है और जीवन के अंतिम क्षणों में तो गंगाजल की पावन बूँद स्वर्ग के पथ को प्रशस्त करने वाली मानी गई है।

एक ओर प्रकृति और दूसरी ओर विज्ञान, मानव-जीवन के ये दो प्रमुख बिन्दु रहे हैं। इन दोनों के बीच में मानव के विकास की यात्रा होती रही है। भौतिक समृद्धि के लिए विज्ञान अपना कार्य करता रहा है तो मानव के सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक विकास के लिए प्रकृति का अपना प्राकृत रूप ही काम आता रहा है, किन्तु आजकल देखने में यह आ रहा है कि विज्ञान प्रकृति को उसके प्राकृत रूप में नहीं रहने दे रहा है, वरन् उसे विकृत कर रहा है। इसका शिकार हमारी गंगा नदी भी हो रही है। विज्ञान-जनित अनेक फैक्टरियों का मलबा गंगा नदी के पवित्र जल में मिल रहा है और भी न जाने किन-किन कारणों से गंगाजल अपवित्र हो रहा है। आज के समाजसेवियों और साहित्यकारों के लिए यह प्रसंग एक चिंतनीय विषय है। इसी परम्परा में मुरादनगर के कवि श्री इन्द्र प्रसाद 'अकेला जी ने भी अपनी लेखनी चलाई है। उनकी **'गंगा माँ की पुकार'** नामक यह रचना गंगा के महत्व तथा उसकी सांस्कृतिक परम्परा को रेखांकित करते हुए आज उसके साथ मानव के द्वारा किये गये दुर्व्यवहार की कहानी भी कहती है।

'अकेला' जी ने गंगा की इस पीर को सुनाने के लिए कविता की जिस विधा को अपनाया है, वह है दोहा। दोहा हिन्दी कविता का वह महत्वपूर्ण और संक्षिप्त छंद है जो आज भी लोक-जीवन के जन-मानस में अपनी लयात्मक उपस्थिति से गौरवान्वित है। 'अकेला' जी ने संभवतः इस छंद का चुनाव इसीलिए किया है क्योंकि वे अपनी भावना और अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाना चाहते हैं। साथ ही इस छंद पर 'अकेला' जी की अच्छी पकड़ भी है।

अपने इस संग्रह में 'अकेला' जी ने प्रारम्भ में गंगा के 'चिरनीरा', 'भागीरथी', 'जाह्नवी' आदि विभिन्न नामों का ब्यौरा दिया है। फिर अनेक दोहों में गंगा की महिमा का गुणगान किया है। उन्होंने गंगा को कहीं माँ की शोभा के सदृश बताया है तो कहीं 'जीवन-दायिनी', 'पतित-पावनी' कहकर 'भवसागर से पार लगाने वाली' भी कहा है-

ऋषि-मुनि सब आते रहे, माता तेरे द्वार।
जन-जन को तूने किया, भवसागर से पार।।

इसके पश्चात् गोमुख से गंगासागर तक की गंगा जी की यात्रा का मनोरम वृत्तांत प्रस्तुत करते हुए उसके प्रदूषण की व्यथा-कथा का वर्णन भी किया है। एक दोहे में अपना दुख व्यक्त करते हुए वे बड़े क्षोभसहित कहते हैं-

गंगा-तट पर जो बसे, रहे गंदगी डाल।
कूड़े-करकट की तरह, उनका होगा हाल।।

कवि 'अकेला' जी गंगा पर विज्ञान का प्रहार दर्शाते हुए उस पर आधारित अनेक परियोजनाओं को सहर्ष स्वीकृत नहीं कर पाते और अगर स्वीकृत करते भी हैं तो इस शर्त पर-

औद्योगिक संयन्त्र का, ऐसा करें प्रबन्ध।
नदियाँ सागर छोड़ दें, औद्योगिक दुर्गन्ध।।

जीवन में जल का सर्वाधिक महत्व है। जल के बिना जीवन संभव ही

नहीं है और गंगा तो अमृत जल का भण्डार है। इंसान और खेत-खलिहानों तथा समस्त वनस्पतियों के लिए पानी का क्या मूल्य है, यह हम सभी जानते हैं। कवि 'अकेला' भी जल को 'जीवन की अमृतधार' बताते हैं। वे कहते हैं-

चोली-दामन सा रहा, जल प्राणी का साथ।
भू पर जल होगा न यदि, कण-कण होय अनाथ।।

कवि गंगा को प्रदूषण से बचाए रखने का संकल्प दोहराते हैं और यह संदेश देते हैं-

जन-जन तक पहुँचाएँगे, आज यही संदेश।
बची रही गंगा अगर, बचा रहेगा देश।।

वे मानते हैं कि यदि गंगा बची रही तो पर्यावरण भी बचा रहेगा। 'अकेला' जी ने इस संग्रह के अंत में "गंगा माँ की पुकार" उपशीर्षक के अंतर्गत कभी गंगा मइया के मुख से और कभी अपने मुख से ही उसको सुरक्षित रखने की करुण पुकार के रूप में कई दोहे लिखे हैं। इन दोहों में कवि के हृदय में इस प्रसंग को लेकर जो उथल-पुथल है, जो करुणा है, उसका मार्मिक वर्णन किया गया है। वे गंगा मइया के मुख से कहलवाते हैं-

गंगा मइया कह रही, ऐसा करो उपाय।
मैं भी मैली ना रहूँ, जग की करूँ सहाय।।

कवि सबको सावधान भी करता है और इस संदर्भ में एक भविष्यवाणी करता है-

देखो मैला मत करो, गंगा का परिवेश।
वरना देखोगे यहाँ, गंगा के अवशेष।।

अंत में ऐसी सुन्दर और रोचक पुस्तक के प्रकाशन के समय पर मैं कवि को बधाई देते हुए यह कामना करता हूँ कि यह पुस्तक दूर-दूर तक पहुँचे और पाठकों में ऐसा भाव-संचार करे कि वे स्वयं गंगा को स्वच्छ

रखने का संकल्प करते हुए अन्य लोगों को भी इस महत् कार्य को करने के लिए प्रेरित करे। इस पुस्तक के माध्यम से न केवल गंगा नदी को प्रदूषण से बचाये रखने की कोशिश की बात की जाए वरन् देश-विदेश की अन्य नदियों को भी प्रदूषण से दूर रखने की प्रेरणा मिल सके।

शुभकामनाओं सहित।

दिनाँकः- २४.०४.२०११

डॉ० कुँअर बेचैन
गीतकार
ग़ाज़ियाबाद (उ० प्र०)

जल, जीवन-आधार-'गंगा माँ की पुकार'



डॉ. रमा सिंह

कहते हैं धरती पर प्रथम जीव मछली के रूप में था और मछली के प्राण जल है, अर्थात् जल का अस्तित्व मछली से भी पूर्व था, वह मछली का स्वरूप ही मत्स्येन्द्र अवतार के रूप में माना गया, माना ही नहीं गया, पूजा भी गया, उस प्रथम जीवन से विकसित होते हुए आज विकसित मानव का चरम हमारे सम्मुख है। पर्वत, नदी, नद, नाले, सरोवर, झील आदि की राह से गुजरता मनुष्य आज अन्तरिक्ष की सीमाओं को लाँघ रहा है। प्रकृति को अपनी सामर्थ्य का ज्ञान दे रहा है, विकसित मानव, विकसित बुद्धि। पर यह बुद्धि अगर विवेक को त्याग दे तो क्या होगा? कहा जाता है कि बुद्धि तो है विवेक से काम लो। यह विवेक ही अच्छे-बुरे, सत्-असत्, कर्म-अकर्म, अंधेरे-उजाले का ज्ञान करायेगा। मानव को संस्कारित करेगा, इंसान को इंसान बनायेगा व अपनी संस्कृति का पालन-पोषण करेगा।

मानव का शरीर पंच तत्वों से निर्मित है- क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा- इन पाँच तत्वों का अपना-अपना अस्तित्व है। एक तत्व की कमी भी जीवन को मौत की ओर धकेलती है, कभी आधि कभी व्याधि किसी न किसी रूप में इस मानव को घेरे रहती हैं किन्तु बुद्धि के द्वारा भ्रमित मानव अपनी विरासत को भूलता जा रहा है और एक नई दुनिया के निर्माण की सोच रहा है। एक त्रिशंकु दुनिया महर्षि विश्वामित्र बनाने जा रहे थे और एक नई दुनिया आज का मानव बना रहा है। कितना अन्तर है दोनों के निर्माण में। एक का अहंकार महर्षि से ब्रह्मऋषि कहलाने के लिए था तो दूसरे का अन्तर्विश्व में श्रेष्ठ कहलाने का। आज मानव अपनी पैशाचिक स्पर्धा में यह भूलता जा रहा है कि "किसी को पाने के लिए किसी को खोना भी पड़ता है।"

जल जीवन का आधार है, अगर जल ही नहीं तो जीवन कैसा ? आज देश की सभी नदियाँ या तो सूख गई हैं या गंदे नाले में परिवर्तित होती जा रही हैं। नवधनाढ्यों ने तालाब पाटकर ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी कर दी हैं। सबमर्सिबल

पम्प लगाकर धरती की छाती फोड़कर पानी अंधाधुंध बहाया जा रहा है। इन्हें रोकने वाला कोई नहीं। सरकार संविधान खोलकर बैठी है, देख रही है कि कहीं कोई नियम, कायदा, कानून नदियों को स्वच्छ या जिन्दा रहने के लिए बना हो। मनुष्य का मुख सुरसा की भाँति निरन्तर बढ़ता जा रहा है और सारे जल के स्रोत उसमें समाए जा रहे हैं तो फिर माँ गंगा की क्या बिसात जो इससे बच जाए। हाँ, इस गंगा के दर्द को संवेदनापूर्ण हृदय ही समझ सकता है, जो इस सांसारिक भीड़ में रह कर भी 'अकेला' रहता है, जो ईश्वर के 'प्रसाद' के रूप में 'इन्द्र' बन कर आया है अर्थात् हमारे प्रिय अनुज श्री इन्द्र प्रसाद 'अकेला' हैं, जिन्होंने "गंगा माँ की पुकार" का शुभारंभ ही 'सुरगण वन्दना' से किया है जिसमें माँ गंगा प्रचलित नामों को 'दोहों' में पिरोया है। साथ ही प्रार्थना भी की है।

रहे गर्व से दूर प्रभु! ये मेरे मन–प्राण।
मैं ऐसा लेखन करूँ, हो जग का कल्याण।।

हाँ, कवि का धर्म ही है समाज का, देश का कल्याण। वह जहाँ कवि–कर्म का निवर्हन करता है वहीं समाज का पथप्रदर्शक भी बनता है। कवि कह उठता है–

लकड़ी की त्रिपाई पर, घड़े धरो तुम तीन।
प्रथम घड़ा बालू भरो, दूजा कोयला बीन।।
दो घट से जल छन रहा, तीजे घट में जाय।
यह पानी अब शुद्ध है, सबकी प्यास बुझाय।।

हमारी भारतीयता में जाने कब से स्वच्छ जल रखने की यही विधि बताई गई है। जल का वर्ण कैसा होना चाहिए, कवि 'अकेला' कहते हैं–

आर–पार जिसमें दिखे, वह पावन जल होय।
कुछ–कुछ नीलापन दिखे, यदि जल उज्ज्वल होय।।

कवि 'अकेला' के पथ-प्रदर्शक जिन्होंने "माँ गंगा की पुकार" को पहचाना, वे हैं परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज। जब गुरु की कृपा हो तो माँ वाणी का वरदान स्वतः ही लेखनी से निर्झर रूप

में बह निकलता है– मुनिश्री के चरणों में कवि 'अकेला' का दोहा दृष्टव्य है–

भागीरथ सम आप हैं, तप गंगा उद्धार।
माँ गंगा की मुक्ति का, उठा लिया है भार।।

आज विश्व में हो रहा, मुनिश्री का सम्मान।
गंगा जी को दे रहे, एक अलग पहचान।।

गंगा माँ का विशिष्ट जल ही गंगा माँ की पहचान है, इसकी विशिष्टता को वैज्ञानिकों ने भी सिद्ध कर दिया है कि यह जल कभी भी खराब नहीं होता, इसकी महिमा का चित्र देखिए–

गंगाजल अमृत भया, कभी न दूषित होय।
अन्त समय मुख डालते, हरि मिल जाते सोय।।

यह भारत की सभ्यता, भारत का संस्कार।
ममता, समता प्रेम की, गंगा निर्मल धार।।

इसी गंगा के तट पर कई धाम बस गए, गोमुख से गंगासागर तक लहलहाती, हरहराती गंगा चली तो मात्र ऋषिकेश ही नहीं, शुक्रताल, गढ़मुक्तेश्वर, इलाहाबाद (संगम), काशी, बैजनाथधाम, पटना, बंगाल तब गंगासागर– कवि का प्रसन्न मन कह उठता है–

माँ जब सागर से मिली, करने को विश्राम।
गंगा सागर बन गया, माँ का पावन धाम।।

गंगा सागर आ गई, पूर्ण हो गया हेतु।
सिन्धु–प्रेम में बँध गया, नवल प्रेम का सेतु।।

बहुत लम्बी दूरी माँ गंगा ने तय की, मानव सुख की कामना ले धरती पर उतरी, कुंभ, अर्द्धकुंभ के मेले किए, तन–मन को पवित्र किया और समा गई सिन्धु की बाँहों में। यह तो जगत का नियम है जो आयेगा वो जायेगा, फूल

खिलेगा, महकेगा और झर जायेगा, इस शाश्वत नियम को कौन तोड़ पाया है। गंगा की धार भी इस शाश्वत नियम से बँधी है, उसका जल निसर्ग की पावन पवित्र देन है, किन्तु कलियुगवासी मानव का मन जितना कलुषित हो रहा है, उतना ही वह गंगा को भी प्रदूषित कर रहा है। स्वर्ग से निकल कर शिव की जटा में समाकर भागीरथ के भगीरथी प्रयास से गंगा जब धरती पर अवतरित हुई तो स्वर्ग से धरती तक के वासी प्रसन्न हुए, पतितपावनी गंगा माँ के रूप में आई। आज गंगा पर अनेक बाँध बँध गए, जल प्रदूषित हो रहा है, क्योंकि कई नाले सीधे गंगा में ही मिलाए जा रहे हैं। ऐसे में माँ गंगा स्वयं कह उठती है–

मेरे तट पर गन्दगी, मत फैलाओ पुत्र।
मुझमें पावनता निहित, ज्यों फूलों में इत्र।।

और–

अब गोमुख के पास ही, गंगा रही पुकार।
कौन भागीरथ सिन्धु तक, ले जाए मम धार।।

जहाँ–जहाँ मानव पहुँच रहा है वहाँ–वहाँ विकास के नाम पर विनाशलीला ही देखने को मिल रही है। बसंत ऋतुओं का राजा है, वह भी गुमसुम है–

ऋतुओं का राजा यहाँ, आज खड़ा चुपचाप।
ना खेतों में फूल हैं, ना गुंजन आलाप।।

फागुन भी हैरान है, सावन रुदन मचाय।
कौन प्रदूषण दंश से, आकर हमें बचाय।।

कवि इन्द्रप्रसाद 'अकेला' का हृदय माँ गंगा की दुर्दशा देखकर हैरान है, परेशान है, वह अपनी लेखनी के माध्यम से भारतीय जनता को जागृत करना चाहता है, जल बिना जीवन नहीं, गंगा बिना भारत नहीं, यदि जल नहीं तो क्या होगा ? शायद तीसरा विश्वयुद्ध जल के कारण ही हो–

जल को लेकर यदि मचा, जग में हाहाकार।
मानव ही कर उठेगा, मानव का संहार।।

कवि कहता है–

मन को निर्मल कर मनुज, फिर गंगा का नीर।
सफल मनोरथ हों सभी, मत हो अधिक अधीर।।

कवि इन्द प्रसाद 'अकेला' ने **''गंगा माँ की पुकार''** दोहावली में मानव की कथनी–करनी का अन्तर, दुःख, क्षोभ आदि को विस्तार से 700 **से अधिक** दोहों में समाया है। विभिन्न शीर्षक के मध्य लिखे दोहे मनसा, वाचा, कर्मणा के साथ–साथ सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् की ही अभिव्यक्ति है यथा शीर्षक–सुरगण वन्दना, स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी के चरणों में, परमार्थ निकेतन, माँ गंगा के विभिन्न नाम, गंगा की महिमा, गोमुख से गंगासागर तक, बढ़ता प्रदूषण घटता नीर, मत रोको जलधारा, जल जीवन की अमृतधार, गंगा प्रदूषण मुक्त करो, गंगा व पर्यावरण बचाओ, **'गंगा माँ की पुकार'** कवि की अन्तश्चेतना की शाब्दिक यात्रा है। **माँ गंगा पर इतने दोहे एक साथ कभी भी पढ़ने में नहीं आए।** शायद इतना किसी ने लिखा भी न हो, किन्तु **गुरु का आशीर्वाद, मुनि श्री की प्रेरणा व माँ गंगा से अनन्य प्रेम ने कवि की लेखनी से वह सब लिखवा दिया जिसे आज तक किसी ने नहीं लिखा। कवि ने माँ गंगा के माध्यम से देश की सभी नदियों के प्रति अपनी चिन्ता प्रकट की है।**

ऐसा कवि स्नेह का, आशीर्वाद व साधुवाद का पात्र स्वयं ही बन जाता है। मैं हृदय से प्रिय इन्द्र प्रसाद 'अकेला' को आशीष देती हूँ माँ वाणी से प्रार्थना करती हूँ कि वे कवि की लेखनी को इसी तरह चलाए रखे।

सम्पर्कः– **डॉ. रमा सिंह**
के.एम.–१५९ **सदस्य– केन्द्रीय हिन्दी समिति**
कविनगर, ग़ाज़ियाबाद। **भारत सरकार, नई दिल्ली**

गंगा माँ की पुकार


श्रीप्रकाश शर्मा 'मगन'

अपने लेखन के प्रारम्भिक दौर से आज तक पूर्ण श्रद्धा के साथ मुझे गुरु का सम्मान देने वाले सुकवि श्री इन्द्र प्रसाद 'अकेला' आज राष्ट्रीय स्तर के परिपक्व कवि एवं लेखक बन चुके हैं। मुझे गर्व है कि हिन्दी के विकास हेतु जब से उन्होंने लेखन प्रारम्भ किया है, निरंतरता बनाये रखी है। मैंने उनकी सर्वाधिक रचनाओं का रसास्वादन किया है, जो अनेक विधाओं में विविधताओं से ओतप्रोत है। भाषा अत्यंत सरल, सुग्राह्य एवं मर्मस्पर्शी है।

देश-काल-परिस्थिति के अनुसार सामयिक विषयों पर जनहिताय रचनाएँ समाज को देकर 'अकेला' जी ने सुधारवाद का तूर्यनाद किया है फिर भला वे पतित पावनी गंगा एवं सभी अन्य विभीषिका से अवगत कराते हुए अचिंत समाज की अंतर आत्मा को झकझोरने हेतु "गंगा माँ की पुकार" दोहा-संग्रह की रचना कर एक सराहनीय कार्य किया है। इस कालजयी रचना का प्रकाशन समय की माँग है।

गंगा, भारत का ही नहीं विश्व का गौरव है। यह वास्तव में एक देव सरिता है, जो अपनी पवित्रता के रहस्यों को समेटे हुए भारत की देवभूमि पर अवतरित हुई एवं अविराम गति से बहती हुई प्राणी जगत को लाभान्वित करती आ रही है। यह गर्व की बात है। अतः जाह्नवी की पवित्रता बनाये रखने हेतु काव्य के माध्यम से समाज को सचेत किया जाना एक भगीरथ प्रयास है। संग्रह का प्रत्येक दोहा लक्ष्य के इर्द-गिर्द अपनी व्यापकता का आभास करता है। मानवीकरण का प्रयोग कर कवि ने गंगा के द्वारा अपनी व्यथा को कहने का सफल प्रयास किया है। गंगाजल प्रदूषण के प्रति कवि का क्षोभ काव्य में स्पष्ट दिखता है। प्रस्तुत दोहा इसका उदाहरण है-

"गंगा ने सबसे रखा, चिर पावन सम्बंध।
मानव ने तोड़े सदा, पर मधुरिम अनुबंध॥

इस सराहनीय प्रयास के लिये कवि को मेरा शुभ आशीर्वाद।

श्रीप्रकाश शर्मा 'मगन'
बी/४९२बी., पटेलनगर-२ ग़ाज़ियाबाद।

आत्मीय भावाभिव्यक्ति


राम महेश मिश्र

विगत फरवरी माह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के आध्यात्मिक सेवाश्रम परमार्थ निकेतन से राष्ट्र–धर्म–संस्कृति की सेवार्थ कार्यारम्भ करने का जब सुअवसर मिला, आरम्भिक अवधि में ही कविवर श्री इन्द्र प्रसाद अकेला जी की काव्य–कृति 'गंगा माँ की पुकार' की पाण्डुलिपि पर हमारी दृष्टि गई। काव्य के विभिन्न खण्डों को देखने के बाद गहरी आत्मिक सन्तुष्टि हुई कि श्री अकेला ज़ी ने माता गंगा की आन्तरिक पीर को इस तरह से उकेरा है कि आम आदमी हो या मूर्धन्य कहे जाने वाले खास व्यक्तित्व, गंगा माँ की आज की असहनीय पीर, सबकी पीर बन जाए, सम्पूर्ण राष्ट्र की पीर बन जाए। उनकी हर एक पंक्ति में माँ गंगा अपने बेटों से, बेटियों से गुहार लगाती, पुकार लगाती दिखती है। पुकार और गुहार ऐसी कि माँ की कोई भी असली सन्तान, हाथ पर हाथ धरकर बैठी न रह सके, वह अपनी जीवन–रेखा–अपनी गंगा को उनकी ढ़ेर सारी पीर से त्राण दिलाने के लिए कुछ न कुछ करने के लिए आत्म–प्रेरित हो सके।

यह काव्य–कृति वस्तुतः एक ऐसे तपस्वी मुनि पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी की आत्मपीड़ा की फलश्रुति है जिनका सम्पूर्ण जीवन, माँ गंगा को समर्पित रहा है। वह अपनी हर क्रिया, हर गतिविधि गंगाजी से जोड़कर देखते और संचालित करते हैं। तभी तो वह कहते हैं कि गंगाजी से दूर रहकर मुझे कहीं भी, कुछ भी भाता नहीं। वह जब कोई सेवा–केन्द्र स्थापित करने की बात सोचते हैं तब वह उसके लिए गंगाजी का पावन किनारा ही ढूँढते हैं। ऐसे तपोनिष्ठ गंगापुत्र के गंगाप्रेम की अनुकृति है, यह काव्य 'गंगा माँ की पुकार'।

यह कृति न केवल गंगाजी बल्कि देश की सभी नदियों को प्रदूषण से मुक्ति दिलाने की प्रेरणा देने का साधन व माध्यम बन सके, यही कामना, मंगलकामना। भाई श्री अकेला जी के इस सत्प्रयास के लिए उन्हें ढेरों बधाइयाँ।

(राम महेश मिश्र)
निदेशक
कार्यक्रम कार्यान्वयन, परमार्थ निकेतन
ऋषिकेश, उत्तराखण्ड

email-mishraji@parmarth.com
Web : www.parmarth.com
www.gangaaction.org.com
Ph-9411106609,8859451425

गंगा मैया की पुकार


सुनीता रानी

भगवान् शिव ने जब अपनी जटाओं में गंगा को धारण किया तो धरती मुस्कराई, गगन नृत्य कर उठा, ऐसा देख मलयज पवन धीरे-धीरे शान्त हो बहने लगा, कहने लगा लो माँ आ गई धरती का उद्धार करने, कल्याण करने। धरती का कण-कण विस्मित, चमत्कृत, यहाँ का प्रत्येक प्राणी छोटे से लेकर बड़े तक इसी में, इससे बाहर किन्तु इसके निकट अपना आश्रम बनाने लगा, अपना कल्याण करने लगा। माँ गंगा के स्वच्छ धवल आँचल की छाया में जगत का कल्याण होने लगा। धीरे-धीरे प्राणी के राम रूप पर जब बुद्धि (विज्ञान) रूपी रावण अपना अधिपत्य जमाने लगा, उसका विकराल रूप, माँ की अवहेलना के रूप में ही प्रत्यक्ष हुआ। सम्पूर्ण मानवता की पालनकर्ता माँ गंगा, बस तन्वंगी अश्रुधारा के समान रह गई, वह विवश होकर जैसे कह रही है 'हे ऋषियों, मुनियों, सन्तों, महात्माओं आप सब मिलकर मुझे बचा लें, वरना मैं इस धरा-धाम से पुनः अपने धाम जहाँ से आई थी वहीं लौट जाऊँगी।

माँ गंगा की इस पुकार को भारतीय जनमानस के साथ-साथ राष्ट्रीय कवि श्री इन्द्रप्रसाद अकेला ने केवल सुना ही नहीं, महसूस भी किया उनका हृदय द्रवीभूत भी हुआ किन्तु बिना गुरु की कृपा के वह शब्दचित कैसे होता? स्वप्न में ब्रह्मलीन परमपूज्य स्वामी श्वासानन्द जी की कृपा मिली, रास्ता मिला परमपूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज से, इनके साथ मिला गंगा माँ व आदिनाथ शिव का आशीर्वाद फिर क्या था कवि की लेखनी से माँ की रक्षार्थ सात सौ दोहों की दोहावली रच गई।

कवि श्री इन्द्रप्रसाद अकेला की लेखनी माँ गंगा के आशीर्वाद व अपने आध्यात्मगुरुओं की कृपा सें ऐसे ही अनवरत चलती रहे पाठकों/श्रोताओं के हृदय पर अंकित होती रहे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

सुनीता रानी
उपाध्यक्ष
साहित्य सृजन समिति
गाज़ियाबाद (उ० प्र०)

जीवन दायिनी-माँ गंगा



इन्द्र प्रसाद 'अकेला'

सृष्टि के प्रारम्भ से ही जल, प्राणियों तथा समस्त जीव-जन्तुओं के जीवन का आधार रहा है। कवि रहीम जी ने भविष्य में पानी की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कह ही दिया था "*रहिमन पानी राखियो, बिन पानी सब सून*" हमारे सभी धर्मग्रन्थों में नदियों का महत्व दर्शाया है और मनुष्य को सचेत किया कि नदियों पर ही हमारा जीवन आधारित है। प्रारंभिक काल से लेकर आज तक अधिकतर गाँव, कस्बों एवं शहरों का अस्तित्व नदियों पर ही आधारित रहा है। मनुष्य एवं जीव-जन्तुओं के जीवन-यापन का माध्यम नदियों का जल रहा है। प्रकृति या हमारे इष्ट देवों की कृपा से नदियों का अवतरण हुआ, नदियों के जल ने हमें हरियाली, वनस्पति, फलदार वृक्ष, फल, पौधे तो दिये ही साथ-साथ समस्त वसुन्धरा को हरा-भरा भी किया। पर्यावरण की रक्षा मानों प्रकृति ने स्वयं की। नदियों के किनारे मेलों का आयोजन हमारी आस्था का प्रतीक रहा है। लेकिन बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण ने आज सब कुछ निगल लिया। शेष जो बचा उसे वृक्षों की अंधाधुंध कटाई निगल गई जिससे हमारा पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया और पर्यावरण दूषित हो गया।

आज जहाँ नदियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है, वहीं मानव एवं जीव-जन्तुओं का जीवन भी खतरे में पड़ गया। क्योंकि कल-कारखानों से निकलने वाला ज़हरीला गन्दा पानी इन्हीं नदियों में डाला जा रहा है। जिससे नदियाँ आज नालों में बदल गई, झीलें दूषित हो गई, पर्यावरण दूषित हो गया। ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों पर अतिक्रमण हो गया, नहरें गन्दा पानी ढोने पर मजबूर हो गई। ऐसे में 'नदियाँ बचाओ जीवन बचाओ' अभियान सम्पूर्ण भारतवर्ष में चलाए जा रहे हैं। शासन-प्रशासन और अनेक सामाजिक संगठन जल की बिगड़ती स्थिति से चिन्तित अवश्य है और कार्य भी कर रहे हैं। आज हमें सच्चे मन से कार्य करने की आवश्यकता है। तभी हम जल जीवन की अमृत-धार को बचा सकते हैं। आने वाले समय में यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो वह पानी के

लिए होगा। वर्तमान में शहरों एवं गाँव में पानी के लिए हत्याएँ होने लगी हैं। आओ, हम सब मिलकर गंगा के साथ-साथ सभी नदियों की रक्षा करने तथा उन्हें बचाने का सच्चे मन से संकल्प लें। जल देवता की पूजा जीवन की पूजा बन जाए और प्राणियों के संग-संग जीव-जन्तुओं का भी कल्याण हो जाए।

महाकुंभ 2010 में हरिद्वार जाने का शुभावसर मिला। कुंभनगरी में पर्यावरण की रक्षा, गंगा की रक्षा, नदियों की रक्षा के दायित्व अनेक अखाड़े, सन्त-महात्माओं ने संभाल रखे थे और सन्त महात्मा अपने बलबूते पर ही कहीं-कहीं सामाजिक संगठनों और प्रशासन के सहयोग से नदियों को बचाने के भागीरथ प्रयास कर रहे हैं। परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश, शान्तिकुंज, हरिद्वार तथा अनेक संगठन संस्थाएँ सकारात्मक रूप से सक्रिय होकर कार्य कर रहे हैं।

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश ने गंगा को बचाने का बीड़ा उठाया है। 'गंगा एक्शन परिवार' के माध्यम से "गंगा बचाओ-जीवन बचाओ" अभियान स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज (मुनिश्री) ने चला रखा है। उन्हीं की कृपा, आशीर्वाद और सान्निध्य से, जो प्रेरणा और आत्मबल मिला, उसी आत्मबल के सहारे यह कार्य पूर्ण हुआ।

कुंभ मेले में स्वामी जी ने परमार्थ निकेतन में संध्या बेला में कहा कवि जी गंगा माँ के लिए कितने दोहे लिख सकते हो। कवि-मुख से अनायास ही निकल गया "जितनी आपकी कृपा हो जाए और गंगा माँ का आशीर्वाद मिल जाए।" स्वामी जी प्रसन्न हुए उन्होंने कहा-"कवि जी हम आपके दोहे गंगा के किनारे सभी तीर्थ स्थलों पर गोमुख से गंगा सागर तक अंकित कराएँगे एवं इसके प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार की सारी ज़िम्मेदारियाँ परमार्थ निकेतन उठाएगा।

मैं गुरु आज्ञा धारण कर चला आया। माँ गंगे, भगवान भोले शंकर और गुरु गणेश की दिव्य कृपा से एक ज्योति मेरे मन-मन्दिर में जली और माँ गंगा पर सात सौ से अधिक दोहे लिखवा दिये। मैं नहीं जानता और न जाने कितनी वन्दनीय सूक्ष्म शक्तियों का इस पावन कार्य में योगदान रहा है। हाँ, मेरे मन में गंगा का उद्‌गम हुआ और मैं गोमुख से गंगा सागर तक गंगा में डुबकी लगाता चला गया। मेरे अन्तर्मन के चक्षुओं ने जो देखा, महसूस किया, वहीं शब्द माँ शारदा लेखनी से कागज़ पर अवतरित करती रही, समय अपनी गति से चलता

रहा। **'गंगा माँ की पुकार'** रचकर परम पूज्य स्वामी जी के चरणों में ले गया। मुनिश्री बड़े प्रसन्न हुए और आशीर्वाद दिया। जब भी समय मिला स्वामी जी ने प्रत्येक दोहे का गहराई से अध्ययन और चिन्तन-मनन किया।

इस पुनीत कार्य में जहाँ परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज मुनिश्री की कृपा हुई, वहीं मेरे जन्म-जन्मांतर के आध्यात्मिक गुरु (ब्रह्मलीन) स्वामी श्वासानन्द जी महाराज की दिव्य छत्रछाया मेरे ऊपर बनी रही। सभी इष्ट देवों की दिव्य कृपादृष्टि से ही यह कार्य पूर्ण हुआ।

दिव्य इष्ट कृपा के साथ-साथ डॉ० के०पी० गौड़, डॉ० कुँवर बेचैन, श्री राजकुमार सचान 'होरी', श्री रामकिशन बन्धु, राकेश मोहन गोयल, कृष्ण मित्र, डॉ० रमासिंह, श्रीमती नेहा वैद, एस०पी० शर्मा 'मगन', गीतकार कुमार पंकज, सत्यपाल सत्यम्, मनोज कुमार मनोज, चन्द्रभानु मिश्रा, अखिलेश कौशिक, डॉ० सुखवीर सिंह, श्री राम महेश मिश्रा, शालीन त्यागी, परमादरणीया, श्रीमती सुनीता रानी मेरे जीवन का आदर्श रहीं, जिन्होंने मुझे आत्मबल, प्रेरणा और जीवन-मूल्य प्रदान किए और गंगा माता पर लिखने का आत्मबल, मेरे मन-मन्दिर को दिया। श्याम मोहन तिवारी आदि का भरपूर सहयोग माँ गंगा के इस कार्य में मिला। मेरे सुपुत्र अनुभव, पुत्री प्रतिभा और अर्धांगिनी सुशीला देवी का भरपूर सहयोग मिला, जिससे यह कार्य पूर्ण हो पाया। मैं सभी का आभारी हूँ।

सदैव आभारी रहूँगा परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज मुनिश्री जी का जिन्होंने मुझे आत्मबल, प्रेरणा शक्ति, मार्गदर्शन और आर्थिक सहयोग प्रदान किया। गंगा मैया, स्वामी जी की कृपा से बची रहेगी और उनका भागीरथ प्रयास सार्थक व सफल होगा। परम पूज्य स्वामी जी के श्री चरणों में कोटिशः वन्दन!

इन्द्र प्रसाद 'अकेला'
११-११-११

कवि/व्यंग्यकार
'काव्यांजलि' १९/३९७ डिफेंस कॉलोनी,
रेलवे रोड़, मुरादनगर,
जिला-ग़ाज़ियाबाद, पिन-२०१२०६ (उ.प्र.)

विषय-सूची

सबके गुरु गणेश

विघ्न विनाशक हैं सदा, गौरी पुत्र गणेश।
मृत्युलोक में काटते, सबके शापित क्लेश।।

नाम अनेक हैं आपके, जग को देते ज्ञान।
देवों में सबसे बड़ा, गणपति का सम्मान।।

मूसक वाहन आपका, करते उस पर सैर।
भक्तों को जो सालता, कैसे उसकी ख़ैर।।

भोले शंकर हैं पिता, मात् भवानी तोय।
कार्तिकेय व गणपति, दत्तात्रेय सुत होय।।

पूजें प्रथम गणेश को, इस धरती के भक्त।
मन से जो माँगा मिला, करी भावना व्यक्त।।

ज्ञान, ध्यान, सम्मान में, और न दूजा कोय।
जो गणेश पूजन करे, वही आपका होय।।

इस नश्वर संसार में, गणपति देव महान।
देवों के भी देव हो, जन-जन के भगवान।।

गंगा के तट पर खड़े, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
कवि 'अकेला' कह रहा, सबके गुरु गणेश।।

माँ वीणा-पाणि वन्दना

है गुरुवर की प्रेरणा, माँ का शुभ आशीष।
मात् शारदा चरणों में, सदा झुकाऊँ शीश।।

मन-मन्दिर पावन करो, शब्दों का दो सार।
विनती है माँ नित करो, आकर नेह-दुलार।।

हे माँ मुझको शक्ति दो, जग में गूँजें बोल।
जन-जन को मोहित करें, बोल सदा अनमोल।।

हंसवाहिनी का करुँ रात-दिवस गुणगान।
कवि को तब तक ज्ञान दो, जब तक घट में प्राण।।

पग-पग पर माँ हो रही, तेरी जय-जयकार।
भक्तों के मन में भरो, विद्या, बुद्धि अपार।।

माँ का रूप अनूप है, माँ की कृपा महान।
इस जग को माँ दे रही, सदियों से सद्ज्ञान।।

माँ ने स्वयं आकर लिखी, गंगा माँ की पीर।
पावनता माँ की बचे, शुद्ध रहे गंग-नीर।।

मन में जो गंगा बही, शब्दों की दिन-रात।
गंगा माँ की पीर को, बता गई मम मात।।

सुरगण वन्दना

सरस्वती, लक्ष्मी, भवा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
कृपा भक्त पर कीजिए, गौरी पुत्र गणेश।।

हे स्कन्द ! महागुणी, दत्तात्रेय महान।
गंगा, यमुना, सरस्वती, दो मुझ कवि को ज्ञान।।

रवि, शशि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सियराम।
क्षिति, जल, अनल, अनिल, गगन, विनती राधेश्याम।।

नमन करुँ, वन्दन करुँ, सुरगण, शेष, सुरेश।
सत्, शिव, सुन्दर सृजन से, कारज करुँ विशेष।।

गुरु चरणों में नत रहूँ, मिट जाए अज्ञान।
सदा सृजनरत मैं रहूँ, ऐसा दो वरदान।।

रहें गर्व से दूर प्रभु! ये मेरे मन-प्राण।
मैं ऐसा लेखन करुँ, हो जग का कल्याण।।

निस-दिन गंगा घाट पर, मेरा होय निवास।
स्वामी श्वासानन्द जी, करें हृदय में वास।।

स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी
मुनि श्री के सम्मान में

परम पूज्य महाराज की, होवे जय जयकार।
भारत-संस्कृति से करें, गुरुवर अनुपम प्यार।।

माँ गंगा से नित मिले, सुनकर करुण पुकार।
ऋषिवर करने चल दिए, गंगा का उद्धार।।

'युगविभूति' मुनि आपकी, लगी गंग से डोर।
लोग आपके दरस पा, होते भाव-विभोर।।

धर्म, कर्म के धाम हो, वाणी अमृत-धार।
तन-मन से जन-जन करे, ऋषिवर अनुपम प्यार।।

ममता, समता, प्रेम 'औ', करुणा के अवतार।
भक्तों को करते सदा, भवसागर से पार।।

भागीरथ सम आप हैं, तप गंगा उद्धार।
माँ गंगा की मुक्ति का, उठा लिया है भार।।

भगवा कपड़े धारकर, देते नित उपदेश।
भक्त शुद्ध करते रहें, गंगा का परिवेश।।

दीपों ने मिलकर करी, जगमग गंगा-धार।
गुरुवर के सान्निध्य की, महिमा अपरम्पार।।

परमार्थ निकेतन

जग को पल-पल दे रहे, ज्ञान, ध्यान, सम्मान।
जन-जन का अब कर रहे, मुनी-श्री कल्याण।।

फिर से पावन धाम हो, गंगा माँ का द्वार।
नहीं प्रदूषित धार हो, सपना हो साकार।।

यहाँ धाम परमार्थ को, गंगा माँ दुलराय।
भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की, देवी-सी मुस्काय।।

बालरूप में सीखते, शिष्य, ज्ञान-विज्ञान।
श्रद्धा-भक्ति सुभाव से, लख गुरु की मुस्कान।।

निज भारत की सभ्यता, धर्म-कर्म का सार।
अन्तरमन यह कह रहा, दूषित मत कर धार।।

बाल-शिष्य नित पा रहे, मुनिवर से जो ज्ञान।
उसी ज्ञान-आलोक से, होगा देश महान।।

गीता, वेद, पुराण का, आप दे रहे ज्ञान।
रघुबर सिय मन में बसे, साथ वीर हनुमान।।

शिव जी का मुख देखिए, परम निकेतन ओर।
गुंजित पूजा, आरती, करती भाव-विभोर।।

कहीं सजा दरबार है, कहीं खड़े श्री राम।
देवलोक के देवता, करते नित्य प्रणाम।।

सभी भक्त जन कर रहे, गीतों में जयगान।
पूजा, अर्चन कर रहे, धरकर शिव का ध्यान।।

संध्या, प्रातःकाल में, गंगा–दर्शन होय।
कुछ तो दर्शन कर रहे, पाप रहे कुछ धोय।।

मुक्त प्रदूषण से रहे, गंगा की जलधार।
मुनी श्री अब कर रहे, जगती की मनुहार।।

उसका जीवन धन्य है, जो रखता है ध्यान।
जल दूषित करता नहीं, करे गंग गुणगान।।

ऋषि–रज से पावन सदा, परमनिकेतन धाम।
यही धाम अब कर रहा, गंगा–हित में काम।।

गंगा माँ के विभिन्न नाम

गोमुख से उद्गम हुआ, चिरनीरा है नाम।
श्री चरणों में आपके, भागीरथी प्रणाम।।

गंगा जीवनदायिनी, नाम जाह्ववी होय।
तेरी निर्मल धार माँ, रही पाप को धोय।।

देवपगों को धो रही, त्रिपदा है शुभ नाम।
मंदाकिनी औ' जाह्नवी, सुरनद नाम तमाम।।

सुरतरंगिणी नाम भी, माँ गंगा का जान।
सुरधुनि माँ के नाम को, गाए सकल जहान।।

सुरसरिता, सुरसरि तुम्हें, कहता भारत देश।
स्वर्गपगा माँ नाम भी, पावन एक विशेष।।

गंगा वन्दन-अभिनन्दन

सूरज नित करता रहा, गंगा का श्रृंगार।
किरणें पहनाती रहीं, उर में नूतन हार।।

लहरों के संग खेलतीं, किरणें नूतन खेल।
कैसा अद्भुत लगा रहा, दोनों का ये मेल।।

गंगा के तट गा रही, कोयल मंगलगान।
हरियाली पहना रही, नित नूतन परिधान।।

भगीरथ तपो-साधना, शिव का शुभ आशीष।
प्राणी सब पूजा करें, भला करें जगदीश।।

कल-कल के संगीत से, अविरल बहती धार।
गंगाजल पावन सदा, महिमा अपरम्पार।।

लहर-लहर लहरा रहा, माँ गंगा का नीर।
जड़-चेतन क्या देवता, हरता जन-जन पीर।।

तुलसी-दल, गंगा-सलिल, अंत समय जो पाय।
ऐसा प्राणी पतित भी, स्वर्ग-लोक में जाय।।

पाप सभी के धो रही, माँ गंगा की धार।
जन-जन को करती रही, गंगा मैया प्यार।।

सुख सबको माँ बाँटती, दुख हरती दिन-रात।
निश्छल मन से कर रही, खुशियों की बरसात।।

गंगा के तट कर रहे, माँ का नित सम्मान।
जन-जन साधु, संत जन, करते माँ का ध्यान।।

शीश झुकाकर गंग को, करते सब गुणगान।
भक्ति-भाव, श्रद्धा सहित, पूजे सकल जहान।।

हरियाली भी गा रही गंगा माँ के गीत।
कण-कण को माँ से हुई अजब-ग़ज़ब की प्रीत।।

गंगा-तट पर भक्तगण, दान करें हर रोज़।
दीन, अपाहिज, भिक्षुजन, पावें रुचिकर भोज।।

गंगा-तट पर बैठकर महिमा लिखी विशेष।
काज सिद्ध सब कर गए, आकर पूज्य गणेश।।

गंगा-पूजन, हवन से जन्म सफल हो जाए।
अंत समय प्राणी सदा माँ की गोद समाय।।

गोमुख से गंगासागर

देवलोक से आ गई, गंगा देव प्रयाग।
धरती माँ के देखिए, भाग गए हैं जाग।।

गौमुख से गंगा चली उत्तर-काशी धाम।
सदियों से माँ बह रही, लगा न कभी विराम।।

आया देवप्रयाग जब, बदल गया परिवेश।
ऋषि-चरणों में आ गई, गंगा माँ ऋषिकेश।।

शंकर जी ने गंग को, लिया शीश पर धार।
माँ गंगा आई वहाँ, जहाँ बसा हरि-द्वार।।

शुक्रताल से चल पड़ी, लेकर रूप विशाल।
जहाँ-जहाँ गंगा गई, धरा भई खुशहाल।।

मुक्त सभी गण हो गए, गण मुक्तिश्वर धाम।
दुनिया ने इसको दिया, गढ मुक्तेश्वर नाम।।

बहती, गाती माँ चली, पहुँच इलाहाबाद।
गंग-यमुन संगम हुआ, साध हुई आबाद।।

फिर प्रयाग से चल पड़ी, गंगा काशी ओर।
विश्वनाथ के दरस कर, होती भाव-विभोर।।

हरा-भरा करती चली, खेत और उद्यान।
बैजनाथ में भक्तगण, करें नित्य स्नान।।

सुख सबको माँ बाँटती, पहुँची मगध-बिहार।
निशि-वासर बहती रहे, गंगा माँ की धार।।

माँ गंगे के रूप को, देख रहे दिग्पाल।
कल-कल करती माँ चली, पहुँच गई बंगाल।।

माँ जब सागर से मिली, करने को विश्राम।
गंगा-सागर बन गया, माँ का पावन धाम।।

कितनी लम्बी दूरियाँ, माँ ने कर लीं पार।
जन-जन को सुख दे रही, निर्मल गंगा धार।।

गंगा की जलधार

उगता सूरज दे रहा, रंगों का उपहार।
यों सतरंगी दीखती, माँ गंगा की धार।।

गंगा माँ की गोद में, बैठ करे जो ध्यान।
जन्म सफल करती वही, नित्य करें जो स्नान।।

गंगा के तट पर सभी, दीपक रहे जलाय।
श्रद्धा की उस ज्योति से, मन रोशन हो जाय।।

गंगा की जलधार को, बालक रहा निहार।
मुझसे भी आकर करो, मैया थोड़ा प्यार।।

नैया नाविक से कहे, ले चल तू उस पार।
हरे-भरे तरु तट खड़े, गंगा रहे निहार।।

रवि नित आता दर्श को, गंगा तट की ओर।
पीत रंग जल देख मन, होता भाव-विभोर।।

माँ की शोभा के सदृश, मिलती नहीं मिसाल।
हृदय नयन से देखिए, उर है बड़ा विशाल।।

वन उपवन सब सज रहे, तट के दोनों ओर।
शीतल मंद बयार में, पंछी करते शोर।।

लगा रहे डुबकी सुजन, हर-हर गंगे बोल।
मानव-जीवन सफल हो, पुण्य मिले अनमोल।।

गंगा के संग जुड़ गए, जंगल और ज़मीन।
नेह सलिल मिलता रहे, रहे न कोई दीन।।

शिवजी मानो कह रहे, गंग गुणों की खान।
पर सेवा करते हुए, रखना अपना मान।।

सूनी नाव निहारती, कित है खेवनहार।
कौन खड़ा रह जाएगा, कौन जाएगा पार।।

हिमगिरि का हिम द्रवित हो, बनी शुभ्र जलधार।
गंग रूप में चल पड़ी, करने जग उद्धार।।

अवरोधों को तोड़कर, निज पथ लिया बनाय।
चट्टानों को रौंदती, लहर-लहर हर्षाय।।

जन-जन को देती रही, गंगा जीवन-दान।
चिन्तन में डूबा मनुज, करता माँ का ध्यान।।

सूरज को जल दे रही, बीच धार में नार।
भक्ति-भाव से वह कहे कर दो माँ उद्धार।।

गंगातट आते रहे, राजा, रंक, फ़कीर।
माँ गंगा हरती रही, सबके मन की पीर।।

गंगा की महिमा

भगीरथ ने तप किया, गंगा लई बुलाय।
पुरखों का उद्धार कर, हो कृतज्ञ हरषाय।।

गंगा जीवनदायिनी, सबका रखती ध्यान।
गंगा माँ की शक्ति से, भारत देश महान।।

धरती माँ की गोद में, कलकल करती मात।
प्राणी धोते कलुष सब, शुद्ध करें निज गात।।

सदियों से गंगा बहे, मीलों तक लहराय।
माता की जलराशि से, हर प्राणी सुख पाय।।

देवलोक से जाह्नवी, भू-मण्ड़ल पर आय।
शिव शंकर की जटा में, मंद मंद मुस्काय।।

युगों-युगों से बह रही, गंगा हरि के द्वार।
धरती माता कर रही, गंगा का श्रृंगार।।

ऋषि-मुनि सब आते रहे, माता तेरे द्वार।
जन-जन को तूने किया, भवसागर से पार।।

माँ गंगा की आरती, होती है हर शाम।
चरणों में माँ के सदा, कवि का नित्य प्रणाम।।

महिलाएँ गाती चलें, जल के मंगलगान।
मन-मन्दिर में जग उठे, पानी का सम्मान।।

हर-हर गंगे कर रहे, भक्त सभी माँ आज
पुण्य लाभ सब पाएँगें, सफल हुए सब काज।।

गंगा-जल अमृत भया, कभी न दूषित होय।
अन्त समय मुख डालते, हरि मिल जाते सोय।।

जलचर, जल में कर रहे, गंगा का सिंगार।
देवनदी की गोद में, बसा रहे संसार।।

वन, उपवन सब सज रहे, तट के दोनों ओर।
तरुवर दिखते झूमते, नाच रहे हैं मोर।।

यह भारत की सभ्यता, भारत का संस्कार।
ममता समता प्रेम की, गंगा निर्मल धार।।

गोमुख से गंगा बहे, अमृत रस बरसाय।
धारा जल की देखकर, रोम-रोम हरषाय।।

गंगा माँ की धार है, भारत का आधार।
इसकी महिमा लोक में, अद्भुत अपरम्पार।।

पर्यावरण बचा रहे, रोपो वृक्ष हजार।
जल जंगल से कर सदा, रे मानव ! तू प्यार।।

मंथन हुआ समुद्र का, घट अमरित छलकाय।
जहाँ-जहाँ अमरित गिरा, वहीं कुंभ हो जाय।।

देवलोक-सा धाम है, पावन हरि का द्वार।
अमृत-घट छलका जहाँ, बही गंग की धार।।

महाकाल का नगर है, यह उज्जयनि धाम।
कुछ अमृत छलका वहाँ, तब से है अभिराम।।

नगर प्रयाग बसा जहाँ, संगम तट को जान।
अमृत घट छलका वहाँ, गुणियों की तू मान।।

नासिक देवस्थान है, महिमा बड़ी अपार।
यह भी कुंभ स्थल बना, माँ गोदावरि द्वार।।

चारों धाम पवित्र हैं, जन-गण-मन हरषाय।
जो इनका दर्शन करे, जन्म सफल हो जाय।।

गंगा जी की गोद में, बैठ करें जो ध्यान।
जन्म सफल करते वही, पाते नित सम्मान।।

नदियों ने मिलकर दिया, मानव को जलदान।
अब तो दूषित कर रहा, उस जल को इंसान।।

मन्दिर-मस्जिद से उठे, एक यही आवाज़।
नदी प्रदूषण मुक्त हों, बदलें लोग मिजाज़।।

जाति-पाति के भेद को, गंगा रही मिटाय।
महाकुंभ में पहुँचकर, डुबकी लेव लगाय।।

उमड़ पड़ा हर ओर से, भक्तों का सैलाब।
मन में जागीं कामना, पाएँगें शुभ लाभ।।

कुंभ नगर में हो रहा, गंगा का गुणगान।
कोटि-कोटि सब देवता, यहीं धारेंगे ध्यान।।

संतों की महिमा अमित, अमिट भरा विश्वास।
गंगा माँ की शरण में, बुझती सब की प्यास।।

गंगा मैया ने दिया, सबको जीवन-दान।
जन-जन-मन को सींचती, देती है सद्ज्ञान।।

बच्चे बूढ़े नारियाँ, नौजवान भी संग।
महाकुंभ में दिख रहा, अजब, अनोखा रंग।।

अलग-अलग रंग, रूप हैं, भाषा सबकी एक।
गंगे माँ की शरण में, माथ रहे सब टेक।।

गंगा के तट हो रहे, पूज्य कर्म हर शाम।
गंग, प्रदूषण मुक्त हो, देते यह पैग़ाम।।

सभी अखाड़ों ने किया, फिर से शाही स्नान।
सन्तं यहाँ पर कर रहे, जप, तप, पूजा, ध्यान ।।

धर्म-ज्ञान की हो रही, चर्चा माँ के द्वार।
दूषित मुझको मत करो, गंगा करे पुकार।।

स्वर्गलोक की स्वामिनी, लहर-लहर लहराय।
पग-पग गंगा की ध्वजा, फर-फर-फर फहराय।।

घर-घर में मिल जाएगा, माँ गंगा का नीर।
गंगा माँ ही काटती, मृत्युलोक ज़ंज़ीर।।

मन गंगा जल हो गया, जिसमें तन की नाव।
उसमें बैठे प्राण यों, आते निर्मल भाव।।

वृक्षों की हर डाल पर, पंछी गाएँ गीत।
फूलों पर हैं तितलियाँ, जगा रहीं मन-प्रीत।।

सब नदियों में श्रेष्ठतम्, माँ गंगा का ध्यान।
चार वेद सब शास्त्र भी, करते हैं गुणगान।।

पूजन, हवन औ' आरती, होती प्रातः शाम।
भक्त सभी वहाँ ले रहे, हर-हर गंगे नाम।।

गंगा मैया पर हमें, रहा सदा अभिमान।
दुष्ट जनों का भी किया, माँ तूने कल्यान।।

हरी भरी धरती दिखे, मंगल जंगल बीच।
माँ गंगा निज प्रेम से, सदा रही है सींच।।

मन से महिमा लिख रहे, कविजन सज्जन संत।
गंगा की त्रैलोक्य में, महिमा बड़ी अनन्त।।

गौरव गंगा का बढ़ा, बढ़ा राष्ट्र–सम्मान।
माँ गंगा से ही बनी, भारत की पहचान।।

घट–घट तट–तट से कहे, मुझमें भर दो नीर।
गंगा–ज़ल से हम हरें, जन–जन की मन–पीर।।

जीवन की नैया चली, भरे उम्र का भार।
पार करे नाविक मना, पावन गंगा धार।।

काम शुरू हो जाएगा, चिन्तन करते सन्त।
आज प्रदषण कर रहा, मानवता का अन्त।।

मुनिवर जी की शक्ति से, हुआ अनोखा काम।
गंगा दूषित ना रहे, भक्त कर रहे काम।।

पूजनीय इस देश में, तीर्थद्वार हरिद्वार।
इसकी बाँहों में बहे, गंगा की जलधार।।

गंगा माँ के तट बसा, गुरुवर जी का धाम।
भक्त सभी पूजा करें, हर दिन आठों याम।।

गंगा दूषित न रहे, सन्तों का आदेश।
मुनीश्री अब कर रहे, पावन काम विशेष।।

धरती पर जब आ गई, गंगा की जलधार।
हरा भरा सब हो गया, झूम उठा संसार।।

गंगा जीवन-दायिनी, अमृत उसका नीर।
कवि अकेला ने लिखी, गंगा माँ की पीर।।

गंगा मैली कर चले, पुण्य मिला या पाप।
कभी अकेले बैठकर, चिन्तन करना आप।।

जल में बसते प्राण हैं, जल-जीवन आधार।
युगों-युगों पुजता रहे, जल का हर भण्डार।।

पर्यावरण सुधारने, पहुँच गए सब सन्त।
ऐसा लगता आ गया, गंगा घाट बसन्त।।

अपने-अपने पंथ का, करते सभी बखान।
गंगा मैया का किया, सन्तों ने गुणगान।।

फिर भी पर्वतराज ने, दिया सभी को मान।
गोमुख का भी आज तुम, कर लो पूजा ध्यान।।

आज हिमालय गोद से, फूट रही जलधार।
आओ पर्यावरण का, करें सभी सत्कार।।

सिंचित गंगा नीर से, वन औ' घने कछार।
मानव जिनका कर रहा, नित निर्मम संहार।।

औषधियाँ अगणित उगें, गंगातट के पास।
जिनसे वैद्य-हकीम जन, करें रोग का नाश।।

प्रकृति कर रही है सुलभ, इतना सब कुछ आज।
मानव करने पर तुला, नियति-नीति पर राज।।

गंगा मैया का नहीं, बदला कभी स्वभाव।
आदि-अन्त के साथ है, पुण्य प्रतापी भाव।।

जीवों की रक्षा करे, बाँटे सुख-सद्भाव।
संरक्षण माँ दे रही, पड़े न बुरा प्रभाव।।

पूरी दुनिया में नहीं, दूजा पर्वतराज।
गंगा माँ के शीश का, यह है पावन ताज।।

भारत आँगन बह रही, शीतल मंद बयार।
देवी-सी बहती रहे, देवनदी की धार।।

हरे-भरे हैं वृक्ष जो, रहें नहीं चुपचाप।
वे भी मुनि-सा कर रहे, नित्य गंग का जाप।।

नदियों ने मिलकर दिया, जन-मानस को प्रान।
मगर मनुज ने कर दिया, इनको कूड़ादान।।

विद्यालय में दीजिए, बच्चों को जल-ज्ञान।
बच्चे अब भी क्यों रहें, जल-निधि से अंजान।।

हर बालक को दीजिए, अब ऐसे संस्कार।
जल है जीवन समझ लें, करें सलिल से प्यार।।

गंगाजल से पनपते, जंगल, मीन, ज़मीन।
जल सुख भोगें सर्वदा, जनसेवा में लीन।।

किसी एक का ना रहे, जल पर अब अधिकार।
परमारथ के कारने, इस पर करो विचार।।

नर–नारी सब कर रहे, गंगा में स्नान।
दोनों हाथों से करें गंगाजल का पान।।

बसते–बसते बस गई बस्ती गंगा तीर।
पर सेवा करता रहा माँ गंगा का नीर।।

धरती पर बहती रही शीतल, मंद बयार।
लहरें नित करती रहीं, गंगा का सिंगार।।

धरती पर आते रहे बाढ़ कहीं तूफ़ान।
विपदा में माँ ने दिया, भक्तों को सम्मान।।

हम सब प्रतिज्ञा करें, बची रहे गंग–धार।
गंगा माँ की रक्षा को आओ सब नर–नार।।

पग–पग मानव कर रहा, भू–प्रकृति पर वार।
फिर भी तुझको दे रही, पल–पल नए उपहार।।

बढ़ता प्रदूषण, घटता नीर

बेटे ही करने लगे, यह कैसा खिलवाड़।
गंगा माँ का रूप ही, बेटे रहे बिगाड़।।

कूड़ा-करकट मन भरा, कैसे हो सुविचार।
पहले मन को साफ़ कर, फिर जा गंगा-द्वार।।

घट-घट अब मैला हुआ, घाट-घाट अकुलाय।
गंगा मैली हो गई, संत रहे बतलाय।।

गंगा के तट कीजिए, मिलजुल कर सब साफ़।
हो सकता माता तुम्हें, शायद कर दे माफ़।

आओ मन में ठान लें, ले गंगाजल हाथ।
करें प्रदूषण-मुक्त जल, हो सन्तों के साथ।।

गंगा यदि बच जाएगी, जीवन भी बच पाय।
बिन गंगा के मनुज तू, युग-युग तक पछताय।।

गंगा के अस्तित्व को, जो भी रहे मिटाय।
खुद उनका अस्तित्व ही, धरती से मिट जाय।।

गंगा माँ के हेतु हम, मिलकर करें विचार।
दूषित कोई ना करे, माँ गंगा के द्वार।।

मैल, धूल, कूड़ा कभी, मत गंगा में डाल।
बूँद-बूँद हो जाएगी, तेरे लिए मुहाल।।

गंगा के तट देखिए, कितने हैं मजबूर।
पल-पल हमसे हो रही, गंगा मैया दूर।।

माँ को किसने क्या दिया, सोचो मिलकर आज।
गंगा मैली देखकर, तनिक न आती लाज।।

सभी रहेंगे शान्ति से, माँ गंगा को आस।
किन्तु प्रदूषण देखकर, टूट रहा विश्वास।।

माँ गंगा ने कर दिया जन-जन को खुशहाल।
जन-जन ने माँ का किया, जीवन ही बदहाल।।

माँ गंगा की देन है, हरियाली का ताज।
बेटों ने जाना नहीं, माँ गंगा का राज।।

माँ गंगा का कर रहे, प्राणी अब अपमान।
मगर भक्त कुछ शेष हैं, जो करते सम्मान।।

कूड़े-कचरे के लगे, अब गंगा में ढेर।
समय अभी भी शेष है, मत कर ये अंधेर।।

विष को उगले जा रहे, बड़े-बड़े उद्योग।
गंगा ये दूषित करें, कैसा है संयोग।।

आज विषैला हो गया, माँ गंगा का नीर।
माँ गंगा कहने लगी, फूट गई तक़दीर।।

जिसने ज़हरीला किया, गंगा-जल चहुँ ओर।
उनके जीवन में भला, कैसे होगी भोर।।

बिन जल के जीवित नहीं, रह सकता इंसान।
जल में ही जीवन बसे, सुन ले ओ नादान।।

गंगा माँ के कर रहे, हम सीने में घाव।
दृष्टिहीन मानव हुआ, दिखता नहीं रिसाव।।

नीर प्रदूषित कर रहा, है प्राणी की भूल।
सीने में अब चुभ रहे, माँ गंगा को शूल।।

जीवन दुर्लभ हो गया, भाग रहे जल-जीव।
प्रदूषण के नाम का, दानव हुआ सजीव।।

बादल चोटी चूमता, ढँक लेता आकाश।
उमड़-घुमड़ कर बरसता, फिर भी रहे उदास।।

अगर क्रुद्ध माँ हो गई, नहीं बचे फिर जान।
कालरूप विकराल बन, हर ले सबके प्रान।।

क्यों दूषित करता रहा, गंगा को इन्सान।
बिन गंगा कैसे रहे, भारत देश महान।।

कुछ शहरों में देखिए, माँ गंगा का हाल।
ऐसा लगता निगलता, माँ गंगा को काल।।

बस्ती कैसी बस गई, माँ गंगा के तीर।
दूषित सारा कर दिया, माँ गंगा का नीर।।

स्नान ध्यान करके सुनो, कैसे होंगे शुद्ध।
जब गंगा को करोगे, पल-पल तुम्हीं अशुद्ध।।

गंगा में मत डालिए, आज चिता की राख।
कैसे फिर बच पाएगी, माँ गंगा की साख।।

मृत मानव की अस्थियाँ, मत गंगा में डाल।
गंगा दूषित होयगी, रख ले इतना ख्याल।।

नदी किनारे देखिए, रहे शवों को फूँक।
मुक्ति मिलेगी किस तरह, उत्तर दो, दो टूक।।

खेतों में अब डालिए, आज चिता की राख।
मिट्टी, मिट्टी में मिले, रख लो जीवन साख।।

यमुना के तट कह रहे, लोप हुआ आकार।
मुझको भी दूषित किया, बचा नहीं आधार।।

ताण्डव देखे लघु-बड़े, झेले नरसंहार।
यहाँ प्रदूषण राक्षसी, करती मुझ पर वार।।

गंगा–यमुना, शारदा, आपस में बतियाएँ।
मानव निज सत्कर्म पर, चला रहा है दाँये।।

शहर–शहर औ' गाँव में, आए हैं बदलाव।
दोनों ने मिलकर किए, माँ के दिल में घाव।।

माँ गंगा को देखते, मौन खड़े अवधूत।
आँखों से अंधे हुए, निजता के वशीभूत।।

धीरे–धीरे कट रहे, हरे–भरे सब बाग।
गंगा माँ को डस रहा, मानवरूपी नाग।।

तेरे बिन कैसे बुझे, जन–जन की माँ प्यास।
होगा तेरा स्वच्छ जल, होना नहीं निराश।।

कर्मों को जैसा करे, वैसा ही फल पाय।
महाप्रदूषण कर लिया, अब काहे पछताय।।

संकट में अब पड़ गई, मानव की हर चाल।
जन–जन को निगले यहाँ, दूषित जल–भूचाल।।

मन ही मन पछता रहा, होकर मनुज अधीर।
दूषित सारा कर दिया, गंगा–यमुना नीर।।

दूषित सब कुछ हो गया, दूषित नदियाँ घाट।
अब तो बहती हवा भी, रही प्रदूषण बाँट।।

गर्मी इतनी है बढ़ी, यह है किसकी देन।
मानव को मिलता नहीं, आज कहीं सुख-चैन।।

नदियाँ, नहरें, झील सब, सूख रहे हैं ताल।
यही प्रदूषण की हवा, कर देगी बदहाल।।

निज कर्मों के जाल में, फँसा आज इंसान।
पर्यावरण बिगाड़ कर, बना आज हैवान।।

हरनन्दी-गोदावरी दूषित नदी अनेक।
कोसी, गंडक, घाघरा, पीड़ा सबकी एक।।

रावी सतलज, ताप्ती, सिन्धु रहीं घबराय।
बढ़ा प्रदूषण बोझ अब, और न ढोया जाय।।

इसी प्रदूषण गर्त में, सब कुछ रहा समाय।
मुक्ति मिले कैसे भला, ढूँढ़ो आज उपाय।।

निर्मल जल का रंग अब देखो काला लाल।
यह ज़हरीला कैमिकल, बढ़ जाता हर साल।।

धरती, जल, बहती पवन, सब हैं आज उदास।
मानव अब तो रच रहा, महाप्रदूषण रास।।

झूम-झूमकर डालियाँ, मचा रही हैं शोर।
सभी प्रदूषण रोकिए, हम होते कमज़ोर।।

सब नदियों का देखिए, दूषित होता नीर।
अपना ऐसा हाल लख, नदियाँ हुईं अधीर।।

जब गंगा में गिर रहा, जल, मल, गंदला नीर।
स्वच्छ रहेंगें किस तरह, माँ गंगा के तीर।।

नदी किनारे देखिए, भू-जल अश्रु बहाय।
मेरी भी रक्षा करो, मत हमको बिसराय।।

नदियों के जल में मिले, अवशिष्टों के ढेर।
फिर भी इसको पी रहे, प्राणी देर-सबेर।।

झीलों का जल घट रहा, कम होती बरसात।
वृक्ष लगाओ दोस्तों! बन जाएगी बात।।

मुक्ति प्रदूषण का चला, तू ऐसा अभियान।
नष्ट न हो पर्यावरण, जाग अरे! इंसान।।

आँचल खिंचता देखकर, गंगा होय अधीर।
ज्यों दुःशासन खींचता, पांचाली का चीर।।

आज मनुज ने दाव पर, गंगा दई लगाय।
शकुनि प्रदूषण जीतता, कुछ तो करो उपाय।।

अब भारत में पड़ रही, सूखे की है मार।
यहाँ प्रदूषण ने किया, हरियाली पर वार।।

देख कानपुर में ज़रा, माँ गंगा का रूप।
कूड़े-चमड़े ने किया, इसको वहाँ कुरूप।।

आँख बन्द कर रह रहे, यहाँ भले इंसान।
माँ गंगा का हो रहा, पग-पग पर अपमान।।

हिमशिखरों पर भी पड़े, नित्य प्रदूषण मार।
आज हिमालय का हृदय, करता हाहाकार।।

पर्वतराज नगेन्द्र ये, है नदियों की खान।
निर्झर झर-झर गिर रहे, कल-कल करते गान।।

अश्व प्रदूषण पर मनुज, होकर आज सवार।
प्रकृति-पुनीता पर करे, हिंसक क्रूर प्रहार।।

कहे प्रकृति यह मनुज से, क्यों न निभाता साथ।
काट रहा जिस वृक्ष को, वो हैं मेरे हाथ।।

जीवन दुर्लभ हो गया भाग रहे जलजीव।
प्रदूषण के नाम का दानव हुआ सजीव।।

जनहित जलहित का करो, पहले सोच-विचार।
जल-जीवों पर मत करो, अब तो अत्याचार।।

कुछ उत्तम के फेर में, बुरे रहे परिणाम।
ग़लती मानव कर रहा, भुगत रहा अंजाम।।

मत रोको जलधार

जो सारी परियोजना, गंगा मुख के पास।
वे नदियों का कर रहीं, समझो सत्यानाश।।

बन्द करो ये योजना, तो जीवन बच पाय।
वरना फिर पछताएँगे, जल-जीवन मिट जाय।।

बाँधों में बँधने लगा, माँ गंगा का नीर।
इस बंधन को देखकर, बढ़ती माँ की पीर।।

माँ गंगा के दर्द को, जान गए कुछ संत।
गरिमा वही बचाएँगे, बनकर अब अरिहंत।।

मुनिजन, ऋषिजन, सन्तजन, करते चिन्तन योग।
पतित-पावनी गंग का, दूर करो अब रोग।।

यहाँ प्रदूषण का कहीं, रहे न कोई भाग।
पहले गंगा मुक्त हो, मन में जलें चिराग़।।

कल-कल करती माँ चली, सागर तट की ओर।
सागर-जल से मिल गई, तज कर लोल-हिलोर।।

माँ गंगा करती रही, जन-जन को नित प्यार।
लेकिन पथ में बो दिए, माँ के हमने ख़ार।।

माँ गंगा भयभीत है, कहे न मन की बात।
फिर भी वह बहती चले, धरती पर दिन रात।।

जल विद्युत परियोजना, हो सागर के पास।
जितना भी जल चाहिए, होगी पूरी आस।।

सागर में जो चल रहे, नौवाहन दिन-रात।
कचरा अब मत डालिए, सागर भी सौग़ात।।

औद्योगिक संयन्त्र का, ऐसा करें प्रबन्ध।
नदियाँ सागर से अलग, करें कहीं अनुबन्ध।।

नद, नालों को साफ़ रख, जल से प्रेम प्रगाढ़।
प्राणी पीड़ा से बचें, कभी न आवे बाढ़।।

सब जल की रक्षा करें, वरना होगा लोप।
जल बरबादी से सुजन, सहना पड़े प्रकोप।।

जल, जीवन के लिए है, यह अमूल्य उपहार।
नदी, नहर औ' झील से, करिए मन से प्यार।।

जब से टिहरी बाँध का, पूर्ण हुआ है काम।
गंगा माँ में लग गया, मानो अर्ध-विराम।।

टिहरी जो इक नगर था, जल में दिया डुबोय।
मारे मारे फिर रहे, ठौर मिला ना कोय।।

सूखा-बाढ़ न आ सके, कहीं धरा के पास।
दोनों का हो सन्तुलन, ऐसी युक्ति तलाश।।

ठीक प्रबन्धन हुआ तो, पूरे होंगे काम।
सच्चे मन से कीजिए, खुशियाँ मिले तमाम।।

बस जनहित में हो सदा, बाँधों का निर्माण।
सबको जल मिलता रहे, बचें सभी के प्राण।।

ऐसा नही विधान हो, जो जल को ले सोख।
कभी न बंजर हो सके, धरती माँ की कोख।।

शहर-शहर को जोडता, हो नहरों का जाल।
सजल रहें सूखें नहीं, नहरें, नदियाँ, ताल।।

तट के कभी न पास हों, औद्योगिक संस्थान।
उत्पादन पूरा करें, स्वस्थ रहे इंसान।।

बाँध वहाँ पर बाँधिए, जहाँ नीर भंडार।
जन-जीवन उजड़े नहीं, हो खुशहाली, प्यार।।

दर-दर अब भी भटकते, उजड़ गए जो लोग।
एक बाँध के कारणे, सहना पड़ा वियोग।।

हर दिन अब क्यों कर रहा, भू-प्रकृति पर वार।
फिर भी पगले दे रही पल-पल नए उपहार।।

गंगा माँ को रोककर, दिया बाँध में डाल।
आधी गंगा रह गई, देखो माँ का हाल।।

हरिद्वार-ऋषिकेश में, देखो गंगाधार।
टिहरी वाले बाँध ने, धीमी कर दी धार।।

आओ मिलकर रोक दें, बाँधों का निर्माण।
वरना हर ले जाएँगे, यें गंगा के प्राण।।

नयनों में है आज बस, टिहरी की पहचान।
कितना सुन्दर नगर था, बना दिया शमशान।।

पूजन, प्रवचन, हवन पर, सबको है विश्वास।
पग-पग पर हो शान्ति बस, मन में पनपे आस।।

गंगा बिन होंगे नहीं, पूर्ण मनुज के काम।
इतना ही बस जान लो, गंगा चारो धाम।।

सूख रहे जल स्रोत जो, उनका दोषी कौन।
आज हिमालय पूछता, क्यों है मानव मौन।।

गंगा की ये पीर अब मन में पीड़ा बोय।
पीड़ा को जो हर सके, कौन भगीरथ होय।।

युग-युग से कल-कल बहे, धरती पर माँ गंग।
रक्षा हित सोचा नहीं, छूट जाएगा संग।।

गंगा को प्रदूषण मुक्त करो

जन-जन तक पहुँचाएँगे, आज यही सन्देश।
गंगा मैया बची रहे, बचा रहेगा देश।।

नदी प्रदूषण मुक्त हो, यह होगा सन्देश।
गंगा माँ के कारणे, पूजित भारत देश।।

कहीं प्रदूषण ना रहे, ऐसा हो प्रयास।
फिर पूरी हो जायगी, गंगा माँ की आस।।

अनगिन वृक्ष लगाएँगें, जब हम दोनों तीर।
कुछ तो कम हो जाएगी, माँ गंगा की पीर।।

हरे-भरे सब वृक्ष हों, पक्षी करें किलोल।
चहुँ-दिश में गूँजें सदा, हर-हर गंगे बोल।।

हरा भरा हो जाएगा, वसुधा का रंग-रूप।
जब निर्मल हो जायगा, माँ का सुखद स्वरूप।।

मुक्त प्रदूषण से रहे, जब गंगा की धार।
तब धरती पर होएगी, उसकी जय जयकार।।

रक्षा गंगा की करें, हो ऐसा अभियान।
फिर से गूँजे विश्व में, सुरसरिता की शान।।

पतित पावनी गंग की, महिमा अपरम्पार।
आज प्रदूषण रोकिए, कर माँ की जयकार।।

पावन गंगा धार यह, कल-कल करती जाय।
नदी प्रदूषण मुक्त हो, तब मानव सुख पाय।।

निर्मल जलधारा बहे, गंगा के दरम्यान।
सन्त जनों ने किया है, गंगा का सम्मान।।

हम सबको अब सोचना, माँ गंगा बच जाय।
निर्मल जल हो जाए तो, मन सबका हरषाय।।

अन्दर के घट साफ़ कर, बाहर खुद हो जाय।
कोशिश करके देखना, गंगा भी सुख पाय।।

संकट काटा जायगा, माँ गंगा के घाट।
बढ़ी प्रदूषण की लता, जड़ से देगें काट।।

मिलजुल कर जो तुम रहे, प्रश्न सभी हल जान।
सेवा में लग जाओ सब, कवि का कहना मान।।

कहीं अधिक गर्मी पड़े, वर्षा कहीं प्रगाढ़।
सूखा पड़ जाता कहीं, कहीं सताती बाढ़।।

नदी किनारे हो गए, जंगल सारे साफ़।
कभी नहीं कर पाएगी, गंगा मैया माफ़।।

धरना होगा अब हमें, भागीरथ-सा रूप।
मिटे प्रदूषण आँधियाँ, होगा रूप अनूप।।

निशि-दिन ही अब हो रहा, गंगा जल का नाश।
जाग सके तो जाग जा, होगा बहुत् विनाश।।

आओ प्रण हम सब करें, करके माँ का ध्यान।
रक्षा गंगा की करें, हम सारे इंसान।।

चिन्तन मन से कीजिए, और करो संकल्प।
गंग-प्रदूषण मुक्त हो, बाकी नहीं विकल्प।।

गंगा का फिर से करें, मिलकर सब सम्मान।
दूषित गंगा ना रहे, हो ऐसा अभियान।।

मनोकामना पूर्ण हों, पूर्ण होंय सब काम।
जुटें सफ़ाई में सभी, ऐसा दो पैग़ाम।।

मन, वचन और कर्म से होकर सब तैयार।
गंगा की सेवा करो, सपने हों साकार।।

सब नदियों में श्रेष्ठतम्, माँ तेरा स्थान।
करते सारे शास्त्र भी, गंगा का गुणगान।।

नदियाँ अब दूषित भई, मौसम रूठा जाय।
भूख प्यास नित बढ़ रही, पानी घटता जाय।।

आज भगीरथ कह रहे, रे मानव! सुन बात।
शायद तप करना पड़े, मुझको फिर दिन-रात।।

बिन समझे दोहन किया, माँ गंगा का आज।
अभी प्रदूषण रोक दो, और बचा लो लाज।।

ग़लती मानव ने करी, उसका है अहसास।
तेरी रक्षा करेंगे, माँ करना विश्वास।।

स्वर्गलोक में देवता, करने लगे विचार।
लड़ें प्रदूषण से सभी, हो जाओ तैयार।।

महाप्रलय आ जाएगी, धरती पर इस बार।
पानी के हित देखना, होगा जन-संहार।।

रे मानव ! मत सोचना, ये सरकारी काम।
खुद जल का रक्षण करो, होगा जग में नाम।।

कथनी करनी एक हों, जब होगा यह काम।
मानव फिर तू देखना, सुखद रहे परिणाम।।

सबको जल मिलता रहे, इस पर करो विचार।
वरना भूजल-माफिया, कर लेंगे अधिकार।।

काम-धाम सब छोड़कर, ऐसा करो खयाल।
निगरानी खुद ही करो, होगी बड़ी मिसाल।।

जल–संरक्षण के लिए, करिए सोच–विचार।
खुशहाली आ जायगी, जल पहुँचे घर–द्वार।।

आवश्यक है एकता, रखिए शुद्ध विचार।
तभी प्रदूषण रुकेगा, हो मन से तैयार।।

शीतल जल बहता रहे, नहीं रहें लाचार।
पावन हो वातावरण, जल–जीवन आधार।।

मन में हो यह कामना, जल–पूजन नित होय।
कर्मों की खेती बढ़े, बीज प्रेम के बोय।।

बनी नई नित योजना, हुए करोड़ों खर्च।
गंगा मैली ही रही, कितनी हुई रिसर्च।।

गंगा तट रोशन करो, ऐसे दीप जलाय।
मन का अंधियारा मिटे, भाग प्रदूषण जाय।।

आधे से भी अधिक है, मानव में जलधार।
पानी में ही जानिए, इस जीवन का सार।।

भोजन करने योग्य तो, नीर बनाता मित्र।
पावन पानी से बने, भोजन अधिक पवित्र।।

जो भी हम भोजन करें, पानी उसे पचाय।
बिन पानी जीवन चले, ऐसा नहीं उपाय।।

जल मानव के रक्त को, देता सुखद प्रवाह।
जल तन को मिलता रहे, लहू देखता राह।।

रोम-रोम को चाहिए, पल-पल में कुछ नीर।
जब यह जल मिलता नही, मानव होय अधीर।।

गाँव-शहर को चाहिए, पानी का आधार।
सबको जल मिलता नहीं, मचता हाहाकार।।

वर्षा का जल रोकिए, उसका हो उपयोग।
एकत्रित कर लीजिए, करिए सद्-उपयोग।।

पर्वत से झरने गिरें, देने जल की धार।
इसे जलाशय में भरो, काम आए सौ बार।।

झरनें जल के रूप में, बाँट रहे उपहार।
जीवन-यापन कर रहे, पर्वतीय परिवार।।

कुओं के जल से बुझी, नगर-डगर की प्यास।
दूषित यह भी हो रहा, जनता बड़ी उदास।।

लकड़ी की तिपाई पर, घट रखना बस तीन।
प्रथम घड़ा बालू भरो, दूजा कोयला बीन।।

दो घट से जल छन रहा, तीजे घट में जाय।
यह पानी अब शुद्ध है, सबकी प्यास बुझाय।।

पानी ख़र्चो सोचकर उपयोगी हर बूँद।
व्यर्थ बहाओ मत इसे, निज नयनों को मूँद।।

मानव में जल जो भरा, कम होवे इक सेर।
पानी–पानी ही सदा, प्राण लगाता टेर।।

मुख सूखे बिगड़े दशा, ढाई सेर जब खोय।
तीन सेर कम होत ही, जिव्हा बाहर होय।।

नित्य प्रदूषण दे रहा, मानव बन हैवान।
भूखे–प्यासे मरेंगें, धरती के इंसान।।

आर–पार जिसमें दिखे, वह जल पावन होय।
कुछ–कुछ नीलापन दिखे, वही जल उज्ज्वल सोय।।

तीन रूप जल के मिले, वाष्प–गैस, द्रव्य, ठोस।
प्राणी को हर रूप में, देता है सन्तोष।।

''जिओ व जीने दो सदा'', सन्तों का उपदेश।
''जल जीवन आधार है'', ये भी मन्त्र विशेष।।

स्वच्छ और सुन्दर रहे, माँ गंगा की धार।
यदि पावन हो भावना, सबका हो उद्धार।।

ऊँच–नीच का भेद भी, होवे मन से दूर।
गंगा हित में कीजिए, समय–दान भरपूर।।

आज आत्मबल चाहिए, करने को शुभकाम।
जीवन अर्पण कीजिए, माँ गंगा के नाम।।

रामकथा होती सुनें, कहीं भागवत गान।
फिर भी हम लेते नहीं, गंगा-रक्षक-ज्ञान।।

जल तो है "जल देवता", जल सबका भगवान।
पहले पूजो नीर को, जागो श्रमिक, किसान।।

जल का मोल अमोल है, कर लो सोच-विचार।
ऐसा आज उपाय कर, मिटे नहीं जलधार।।

मिलकर सबको दीजिए, जल संरक्षण ज्ञान।
नगर-नगर औ' गाँव में, हों ऐसे अभियान।।

निर्मल जल उपयोग से, स्वस्थ रहे इंसान।
सीख सभी को दीजिए, दूर होय अज्ञान।।

अपने हाथों कर रहे, पर्यावरण विनाश।
धीरे-धीरे हो रहा, मानवता का नाश।।

गंगा के तट हो रहे, बिन तरुवर सुनसान।
वसुधा से मिट जाएगी, क्या ? इनकी पहचान।।

भू की बुझती है नहीं, जल बिन अब तो प्यास।
हरे-भरे तरु कट रहे, सूख गई सब घास।।

गंगा माँ को देखिए, आज रही अकुलाय।
मुझको मैली कर रहे, सन्त रहे बतलाय।।

इसी प्रदूषण से हुआ, मौसम में बदलाव।
मौसम दूषित हो गया, चहुँ-दिश नीर अभाव।।

गंगा के तट पूछते, भक्तजनों से आज।
अब क्यों हम पर गिर रही, प्रदूषण की गाज।।

अब नयनों में नीर भर गंगा करे विलाप।
कितनी माँ कातर, दुखी, बढ़ता जाता ताप।।

अब गोमुख के पास ही, गंगा रही पुकार।
कौन भगीरथ सिन्धु तक ले जाए मम धार।।

जल पर भी करने लगा, प्राणी अब अधिकार।
नदियों पर अब मत करो, ऐसे क्रूर प्रहार।।

गंगा व पर्यावरण बचाओ

गंगा ने सबसे रखा, चिर पावन सम्बन्ध।
मानव ने क्यों तोड़ दिए, ये मधुरिम अनुबन्ध।।

मानव-जीवन है सदा, पंचतत्व का सार।
पंचतत्व दूषित किए, जीवन हो निस्सार।।

फूलों की अब क्यारियाँ, हरे-भरे मैदान।
बस चित्रों में देखना, रे मूरख ! नादान।।

रहन-सहन, पोषण-भरण, पानी की हैं देन।
मानव जल दूषित करे, फिर फिरता बेचैन।।

हरियाली देती सदा, जीवन को आहार।
बिन पानी संभव नहीं, हरियाली का सार।।

दुनिया का बढ़ने लगा, तापमान दिन-रात।
पिघल रहे हिमखण्ड सब, झेल रहे आघात।।

जल-थल, नभ पीडित हुए, हुआ गगन में छेद।
इसका दोषी मनुज है, जता रहा बस ख़ेद ।।

जल संसाधन के लिए, गुणवत्ता हो ठीक।
देशवासियों को सुजन, देना सीख सटीक।।

मुसीबतें इस पार हैं, समाधान उस पार।
तालमेल बिन सहेगा, बस कुदरत की मार।।

केवट गंगातट खड़ा, देखे माँ का हाल।
नीर प्रदूषित किया तो, रहें नही खुशहाल।।

गंगा मैया अरु प्रकृति, दोनों सबकी मात।
दोनों का पूजन करो, जीवन में हे तात्।।

नदियों का सुनते नहीं, कल-कल करता शोर।
दिखते हैं प्यासे सभी धरती पर चहुँ ओर।।

वन में करते थे कभी, खग, मृग नित्य किलोल।
कानों में पड़ते नहीं, उनके मीठे बोल।।

धरा लोक पर मनुज जब, आया पहली बार।
चहुँ-दिश में बहती मिली, शीतल मंद बयार।।

मानव ने जब से किया, धरा-धाम अधिकार।
तब से कुदरत का किया, उसने नित्य शिकार।।

गंगा तट पर बस गए,कितने शहर औ' गाँव।
माँ ने शीतल जल दिया, दी वृक्षों ने छाँव।।

सूख रहे जल-स्रोत अब, राखे नहीं सँजोय।
सँभल! समय है बावरे, देगा सब कुछ खोय।।

दूषित है जलवायु जब, मिले न शुद्ध बयार।
जग के प्राणी झेलते, इस कुकृत्य की मार।।

बन्द प्रदूषण कीजिए, शीतल बहे समीर।
हर्षित गंगा हो सदा, शुद्ध रहे नद-नीर।।

जल-थल नभ अब चढ़ गए,सभी प्रदूषण भेंट।
मानव ने सब कुछ किया, अब तो मटियामेट।।

सभी प्रदूषण त्रस्त हैं, क्या बादल बरसात।
मानव ने सबको दिया, पग-पग पर आघात।।

खतरे में जीवन हुआ, ख़तरे में है नीर।
धरती माँ की सोचिए, कौन हरेगा पीर।।

सबको पार उतारती, माँ गंगा की धार।
दुष्टों को भी कर रही, गंगा मैया प्यार।।

पापों की गठरी लिए, जो भी आए द्वार।
गंगा माँ ने कर दिया, उसका भी उद्धार।।

पाप सभी के धो रही, फिर भी है निष्पाप।
माँ की महिमा देखिए, मिटा रही संताप।।

सोच समझ हल कीजिए, जल-संकट को आप।
वरना हम पा जाएँगे, कुदरत से अभिशाप।।

कल–कल छल–छल बह रही, माँ गंगा की धार।
सबके मन शीतल करे, जो भी आता द्वार।।

माँ गंगा की गोद में, शान्ति मिली अपार।
जो भी आए शरण में, माता करती प्यार।।

लिए मोक्ष की कामना, आते गंगा–द्वार।
माँ है गंगा, पुत्र हम, करती वह उद्धार।।

मल–मल धोए तन मनुज, मिटे न मन का मैल।
माया के पीछे फिरे, ज्यों कोल्हू का बैल।।

पतित पावनी जाह्नवी, मानव को सुख देय।
उस माता को देखिए, यह मानव दुख देय।।

वायु–प्रदूषण है बढ़ा, बदला मौसम देख।
भू–मण्ड़ल विष से भरा, बता रहे आलेख।।

महाप्रदूषण विष लिए, फैला हैं चहुँ ओर।
रक्षा इससे कीजिए. हे प्रभु ! नन्दकिशोर।।

क्षिति, जल, पावक, नभ, पवन, पाँचों तत्व निराश।
इन्हें प्रदूषण मुक्त कर, रोको यहाँ विनाश।।

जहाँ–जहाँ धरती सहे, जल अभाव की मार।
वहाँ–वहाँ पहुँचाइए, भूमि पर जलधार।।

घटते भू-जल को भरो, कर पानी का योग।
कुछ तो भू में जाएगा, बाकी करो प्रयोग।।

जीव-जन्तु यदि मर गए, बाँधों के आगोश।
प्रकृति कोप यदि बढ़ गया,दोगे किसको दोष।।

जगह-जगह की हो रही, धरती अब बीमार।
खाद्यान्नों की रह गई, आधी पैदावार।।

आज आधुनिक खाद का, आया ऐसा दौर।
धरा-शक्ति कम हो रही, करे न कोई ग़ौर।।

बार-बार रोपे गए, पौधे कई हज़ार।
सभी प्रदूषण के सदा, होते रहे शिकार।।

धरती की ताक़त घटी, घटा धरा का नीर।
मानव ने खुद फोड़ ली, अपनी ही तक़दीर।।

अब समीर विष से भरा, विषमय है माहौल।
क्या कुछ शुद्ध-अशुद्ध है, प्राणी ! इनको तौल।।

अगर प्रदूषण का बढ़ा, आगे और प्रकोप।
दूषित मौसम का असर, सब कुछ कर दे लोप।।

खेतों की हरियालियाँ, निगल रहा है कौन।
आँखों में आँसू लिए, मानव है बस मौन।।

खेतों में अब डालिए, बस गोबर की खाद।
ताकत खेतों की बढ़े, बढ़े अन्न का स्वाद।।

जंगल में अब कर रहे, पंचायत सब जीव।
वन उपवन दूषित हुए, हिली धरा की नींव।।

भँवरें फूलों से कहें, हमको देय पराग।
फूल कहें है जला रही, हमें प्रदूषण आंग।।

आज प्रदूषण मार से, पुष्प भए गमगीन।
यों फूलों की क्यारियाँ, दिखती रंगविहीन।।

बहती गाती पवन भी, आँसू रही बहाय।
मैं भी दूषित हो गई, कुछ तो करो उपाय।।

जल-स्रोतों पर प्रदूषण, डाले बुरा प्रभाव।
आँख खोलकर देखिए, कितना बढ़ा दबाव।।

गंगा की अपनी नदी, राम-गंग बदरंग।
कालि, गोमती, घाघरा, बदल रहा जल रंग।।

वर्षा के जल से बुझे, धरती माँ की प्यास।
वर्षा कम होने लगी, वसुधा भई उदास।।

वर्षा का जल पहुँचता, कूप, ताल् औ' झील।
धरती माँ को सींचती, कण-कण मीलों-मील।।

ना शहरों में कूप हैं, ना पानी के ताल।
शहर-शहर में हो रहा, जीना आज मुहाल।।

गंगा के तट पर बसे, भक्ति भाव ले धाम।
इनमें से कुछ कर रहे, परहित के नित काम।।

आज प्रदूषण बदलता, भौगोलिक परिवेश।
मुक्ति किस विध मिल सके, सोच रहा हर देश।।

मौसम है सबके लिए, जीवन का वरदान।
फिर भी पगले हर रहा, तू अपने ही प्राण।।

वृक्ष अगर कटते रहें. शेष बचेंगें ठूँठ।
मानव के इस कृत्य से, प्रकृति जाएगी रूठ।।

इच्छाएँ तो ले गईं, इक-दूजे के पास।
आपस में भी ना रहा, मानव पर विश्वास।।

गंगा-यमुना कह रही, इस मौसम से आज।
हम पर भी गिरने लगी, महा-प्रदूषण गाज।।

आँखों में आँसू लिए, क्रन्दन करे बयार।
मुझ पर भी पड़ने लगी, आज प्रदूषण मार।।

धरती का शृंगार है, मौसम का उपहार।
उस शोभा को मनुज तू, रहा धुएँ से मार।।

आज सभी पीड़ित भए, क्या धरती आकाश।
अब तो मानव कर रहा, सब कुछ सत्यानाश।।

हँसता-मुस्काता नहीं, अब कोई त्यौहार।
क्या होली, दीपावली, नयनों अश्रुधार।।

फँसा प्रदूषण जाल में, अब पूरा संसार।
पग-पग पर मचने लगा, अब तो हाहाकार।।

नदी रेत में लोटते, कभी मगर, औ' साँप।
आज प्रदूषण देखकर, सभी रहे हैं काँप।।

सोच समझकर कीजिए, नद-जल एकाकार।
नदियों की मिट जाए ना, पावन-सी जलधार।।

पर्यावरण बचाइए, हिम-शिखरों का आज।
छिन जाएगा धरा से, गंगा माँ का ताज।।

हिमगिरि भी चिल्ला रहा, "मेरी सुनो पुकार"।
बिन हिम क्या दे पाऊँगा, मैं शीतल, जलधार।।

गाँव, नगर या हो जिला, या हो कोई प्रदेश।
आज प्रदूषण मार से, बचा न कोई शेष।।

घाट और तट रो रहे, रोए मरघट आज।
मानव से अब हो गई, कुदरत भी नाराज।।

जंगल–जंगल जल रहे, पग–पग पर जल नाश।
जीवों की बुझती नहीं, इस धरती पर प्यास।।

चहुँ–दिश बढ़ता जा रहा, गंदलेपन का भार।
धीरे–धीरे मिट रहा, धरती का शृंगार।।

सावन–भादों कह रहे, बरखा के दिन चार।
आज प्रदूषण कर रहा, सब ऋतुओं पर वार।।

सूखे घट औ' घाट हैं, सूखे तरुवर ताल।
भूखे–प्यासे मर रहे, कौन यहाँ खुशहाल।।

मानसून का हो गया, धूप–छाँव–सा खेल।
आज प्रदूषण रोक दो, रहे सभी दुख झेल।।

भँवरें करने को चले, फूलों का रसपान।
फूलों में रस है नहीं, भँवरे सब हैरान।।

ऋतुओं का राजा यहाँ, आज खड़ा चुपचाप।
ना खेतों में फूल हैं, ना गुंजन आलाप।।

फागुन भी हैरान है, सावन रुदन मचाय।
कौन प्रदूषण दंश से, आकर हमें बचाय।।

सूखी खेती देखकर, रोता आज किसान।
वर्षा अब होती नहीं, रूठ गया भगवान।।

मानसरोवर में नहीं, अब मिलते हैं हंस।
वहाँ प्रदूषण मारता, पवित्रता को दंश।।

ताल, तलैया कह रही, "सुन लो प्यारी झील"।
"दैत्य प्रदूषण देख लो, हमें रहा है लील"।।

सभी जगह अब हो रहा, यह ताँडव विकराल।
नहीं बचाने आएगा, मानव को महाकाल।।

आओ चलकर देख ले, सागर तट के पास।
वह भी हमसे कह रहा, मैं भी भया उदास।।

वृक्ष सभी सूखे खड़े, वसुधा भई निराश।
वन उपवन प्यासे भए, कौन बुझाए प्यास।।

पृथ्वी ने हमको दिया, जल-जीवन का दान।
हमने धरती को दिया, प्रदूषण सामान।।

धरती अरु जल का रहा, सदा आपसी मेल
जल धरती सँग खेलता, आज अनोखे खेल।।

जल जग से मिट जाएगा,प्यासा तू रह जाय।
दर-दर ठोकर खाएगा, चैन कहाँ से पाय।।

हर जंगल का रोकिए, बढ़ता हुआ कटान।
वरना तो रह जाएगा, बस केवल शमशान।।

गाँव-गाँव में थे कभी, जल से पूरित ताल।
आज प्रदूषण मार से, बेचारे बदहाल।।

मानव की तो बढ़ रही, आज प्यास और भूख।
धीरे-धीरे यह धरा, नित्य रही है सूख।।

पल-पल रोटी छिन रही, डग-डग मिटता नीर।
सुनने वाला कौन है, अब धरती की पीर।।

पीपल, बरगद, नीम संग, आडू और अनार।
तुलसी सँग में रोपिए, आम और कचनार।।

मत विटपों को काटिए, ये भी पुत्र समान।
तुझको जीवन दे रहे, सुन ले ओ ! इन्सान।।

जो वृक्षों को काटते, वंशनाश हो जाय।
जब सब कुछ मिट जाएगा, फिर पीछे पछताय।।

पीपल तरु को जानिए, विष्णु देव स्वरूप।
महावृक्ष वट-विटप भी, भू का पूत अनूप।।

दिल्ली प्यासी दीखती, हरियाणा बैचैन।
जयपुर में कटती नहीं, बिन पानी के रैन।।

पानी तो पंजाब का, आज रहा है सूख।
धरती बंजर हो रही, सूख रहे हैं रूख।।

यू.पी. से गढ़वाल तक, लोग रहे घबराय।
पानी घटता जा रहा, जल्दी करो उपाय।।

नगर-नगर अब रो रहा, ग़म में है गुजरात।
मुम्बई प्यासी मर रही, पता चली औकात।।

राजस्थानी भूमि है, अब तो रेगिस्तान।
बिन पानी के कर रहे, बालू में ही स्नान।।

दर्द बढ़ा हर राज्य का, पीड़ित हुआ बिहार।
ज़नता को मिलती नही, पीने को जलधार।।

जल-जीवन जल देवता, जल ही तारणहार।
जग ही जल का अरि बना, देखे पालनहार।।

बढ़ता जब जनभार तो, घटता नदिया नीर।
सबकी लिख ना पाएगा, गंगा-जल तकदीर।।

पर्वत पर कम हो गया, अब देखो हिमपात।
नदियाँ, नहरें सूखतीं, सूखे जलप्रपात।।

बूँद-बूँद उपयोग में, करना सीखो आज।
वरना फिर गिर जाएगी, मानवता पर गाज।।

भले प्रदूषण देखकर, सबका दिल घबराय।
जल स्रोत ये बचे रहें, कुछ तो करो उपाय।।

जल, जीवन की अमृत-धार

जल बिन कब संभव रहा, जीवन का आधार।
जल का तू उपयोग कर, सपना हो साकार।।

जल ने ही हमको दिया, इस जीवन का दान।
जल का ही हमने किया, अब कितना अपमान।।

जल-थल सब सूने भए, क्या बादल बरसात।
आज प्रदूषण लीलता, सबको ही दिन रात।।

बिन पानी कैसे रहे, जीवन ये खुशहाल।
आज सिमटते जा रहे, सागर, नदियाँ, ताल।।

पानी बिन अब तड़पता, ज्यों जल बिन है मीन।
अपने हाथों कर रहा, जीवन तेरह-तीन।।

आज समय की माँग है, जनता आगे आय।
जल-संकट यदि बढ़ गया, तो प्राणी पछताय।।

वन उपवन हों हरित सब, फैलें चारों ओर।
बिन पानी अब मच रहा, ऊधम चारों ओर।।

पर्वत-पर्वत नाचती, पानी की जलधार।
प्राणी में अब है नहीं, पानी का सत्कार।।

पानी के भी रूप हैं, अलग-अलग पहचान।
वर्षा का जल यूँ कहे, मेरी कीमत जान।।

अब नल का जल पी रहे, शहर, गाँव के लोग।
साधु-सन्तों के लिए तो, बस कूओं का योग।।

जीव, जन्तु, पक्षी पिएँ, तालतलैया, नीर।
वृक्षों की छाया कहे, दूषित बहे समीर।।

जंगल-जंगल में रही, जगह-जगह पर झील।
झीलों पर निर्भर रहे, मीन-मगर औ' सील।।

झरने झर-झर-झर रहे, पर्वत से दिन-रात।
ये पर्वत की शान हैं, धरती की सौग़ात।।

नदियों का जल सींचता, दूर-दूर तक खेत।
भवनों के निर्माण में, लगता जल औ रेत।।

ये रहीम कवि कह गए, "बिन पानी सब सून"।
पर्वत, नदियाँ सूखते, सूखा थाली चून।।

जल बिन जीवन है नहीं, मन में करो विचार।
बूँद़-बूँद का समझिए, इस जीवन में सार।।

शहर गाँव बढ़ने लगी, पानी की अब माँग।
दोहन जल का कर रहा, मानव भरता स्वाँग।।

सोच समझकर कीजिए, अब जल का उपयोग।
वरना फिर पछताएँगे, हम भारत के लोग।।

मानव-जीवन में नहीं, जल से कुछ अनमोल।
जल से बढकर कुछ नहीं, इसमें मत विष घोल।।

तरुवर गंगा से कहे, आज बुझा दो प्यास।
पावन जल मिलता नही, जल की हमें तलाश।।

जंगल के सब जानवर, आज लगाते टेर।
पीने को पानी नहीं, हो जाएँगे ढ़ेर।।

दुनिया कैसी बावरी, जल को रही मिटाय।
भू में जल मिलता नहीं, क्या जीवन बच पाय।।

चंदा बिन ज्यों चाँदनी, ज़िए न जल बिन मीन।
जल को दूषित कर रहा, मानव बुद्धि-विहीन।

जब से जल दूषित हुआ, बदल गया परिवेश।
अब सूखे से घिर रहा, अपना भारत देश।।

दादुर, मोर, पपीहरा, जल बिन शोर मचाय।
अब बरखा ना आएगी, क्या जीवन बच पाय।।

नित्य प्रदूषण बढ़ रहा, सही न जाती पीर।
धरती पर निर्मल नहीं, कहीं बचा है नीर।।

चोली-दामन सा रहा, जल, प्राणी का साथ।
भू पर जल होगा न यदि, कण कण होय अनाथ।।

आज उड़ीसा देखिए, देखो राजस्थान।
बुन्देलों की भूमि पर, जल बिन तजते प्राण।।

भू-जल इतना कम हुआ, सूखा देश-प्रदेश।
बिन पानी के देखिए, बदल रहा परिवेश।।

आने वाले समय में, नहीं मिलेगा नीर।
प्यासी-प्यासी फिरेगी, तब राँझे की हीर।।

पानी के हित देखिए, लम्बी लगी कतार।
बात-बात में बढ़ रही, जल पर ही तकरार।।

जल बिन जीवन है नहीं, सबको दो यह ज्ञान।
क्या चुल्लू भर नीर में, डूबे अब इंसान।।

धरती पर अब मच रही, जल के पीछे होड़।
बूँद-बँद को देखिए, मानव रहा निचोड़।।

जल-संग्रह कर लो ज़रा, तो जीवन बच जाय।
वरना भू पर देखना, त्रहि-त्रहि मच जाय।।

पेड़ खड़े अब सोचते, पानी कौन पिलाय।
हे बदरा अब बरस जा, कितना और रुलाय।।

पीने को क्या पिओगे, जब जल न बच पाय।
पानी के हित देखना, युद्ध नया रच जाय।।

पानी में जीवन भरा, इतना लेना जान।
पानी बिन मिट जाएगी, धरती से पहचान।।

मानव तू अब समझ ले, क्या है जल का मोल।
वरना फिर पछताएगा, सुन ले कवि के बोल।।

नदी किनारे घूमकर, रहा 'अकेला' सोच।
दूषित जल को देखकर, केश रहा है नोच।।

मानव को आगाह कर, देना यह सन्देश।
कहीं नीर के वास्ते, पड़े न घर में क्लेश।।

जल के अन्दर ही बसे, सब जीवों के प्राण।
जल-प्रबन्ध ऐसा बने, हो सबका कल्याण।।

जल कितना अनमोल है, हो प्राणी को ज्ञान।
जो भी जल दूषित करे, होवे दण्ड-विधान।।

रूठ गई धरती, पवन, रूठा गगन विशाल।
जल बिन जीवन देखिए, ज्यों मछली का हाल।।

आज व्यवस्था कीजिए, जल दूषित ना होय।
वरना फिर पछताओगे, चिरनिद्रा में सोय।।

दूषित जल के देखिए, दूषित सब परिणाम।
जग सारा पछताएगा, क्या होवे अन्जाम।।

जैसे रक्षा हित बने, रक्षा-हित बल आज।
जल की रक्षा के लिए, कर लो ऐसे काज।।

पानी जब सबको मिले, होगा देश महान।
कभी सूख ना पाएँगें, गाँव, खेत, उद्यान।।

हरनन्दी जो नाम था, हिंडन अब कहलाय।
इतनी मैली हो गई, आँसू रही बहाय।।

पीते थे जल शान से, क्या राजा क्या रंक।
लेकिन अब लगने लगे, दूषित जल के डंक।।

बूँद-बूँद को ढूँढते, अब पर्वत के लोग।
क्या बच्चे क्या नारियाँ, सहते सभी वियोग।।

कावेरी जल के लिए, आज मची है जंग।
बँटवारे पर अड़ रहे, कर मर्यादा भंग।।

कर्नाटक से तमिल लड़े, जल पर होय विवाद।
प्यासी जनता कर रही, दोनों से फ़रियाद।।

हरियाणा पंजाब में, बहु नदियों की धार।
प्यासी जनता ताकती, सहे प्रदूषण मार।।

धरती माँ से कह रही, गंगा आज पुकार।
शुद्ध नही वातावरण, कैसे होय सुधार।।

नगर-नगर में उग रही, बस्ती आलीशान।
पानी की सुविधा नहीं, सूख रहे जन-प्रान।।

नगर गाँव का देखिए, कितना हुआ विकास।
दूषित जल का आज भी, ढंग से नहीं निकास।।

रोज-रोज अब बढ़ रहा, शहरों का आकार।
पानी सबको मिल सके, सपना हो साकार।।

बस्ती गन्दी हो गई, दूषित होता नीर।
आज कहाँ हम आ गए, फूट गई तक़दीर।।

पानी-पानी के लिए, मचता हाहाकार।
पर्वत में पानी नही, सूख गई जलधार।।

खेत और बियावान भी, बिन पानी बेकार।
पहुँचे इनके पास भी, नहरों से जलधार।।

बस्ती, पथ, पर रोक दो, पानी का छिड़काव।
वरना एक दिन लगेगा, पता सलिल का भाव।।

बोतल में बिकने लगा, जीवन-दाता नीर।
जन-जन की कैसे मिटे, बिन पानी के पीर।।

जीवन कैसे जिएँगें, बिन पानी अब लोग।
बिना काज होने लगा, जब पानी उपयोग।।

मुख मोड़ा बरसात ने, वृक्ष खड़े कर जोड़।
हे जल के जल देवता, कुछ तो पानी छोड़।।

धरती माँ की गोद में, पानी रहा न शेष।
अब जल कैसे आएगा, बादल गए विदेश।।

मानव-जीवन की रही, जल ही बस बुनियाद।
पर जल को करने लगा, अब मानव बरबाद।।

जल को दूषित मत करो, ये जीवन की बेल।
आज प्रदूषण रोक दो, ख़त्म होय सब खेल।।

धरती के भू भाग से, जल का हुआ निकास।
आज मनुज करने लगा, जल का खूब विनाश।।

गंगा ने सबको दिया, अपना स्नेह-दुलार।
वह रोकर कहती सुनो ! मेरी करुण पुकार।।

मेरे तट पर ग़न्दगी, मत फैलाओ पुत्र।
मुझमें पावनता निहित, ज्यों फूलों में इत्र।।

गंगा मैया कह रही, ऐसा करो उपाय।
मैं भी मैली ना रहूँ, जग की करूँ सहाय।।

लगे किनारे वृक्ष जो, उनकी सुनो पुकार।
हरियाली के वास्ते, वृक्ष लगाओ हज़ार।।

क्या जग में बच पाएगी, गंगा की पहचान।
वृक्ष हवा से पूछते कैसे हो कल्यान।।

सन्त सभी अब कर रहे, नूतन सुखद प्रयास।
माँ गंगा बच जाएगी, सबको पूरी आस।।

संत बड़े आहत दिखे, लखकर गंगा त्रास।
पर निर्मल हो जाएगी, सन्तों को विश्वास।।

पहले मन को साफ़ कर, फिर गंगा का नीर।
यदि मन निर्मल हो गया, मिटे गंग की पीर।।

गंगा, यमुना से कहे, हम दोनों हैं मौन।
पावनता धूमिल हुई हमें बचाए कौन।।

पानी मुझ में देखिए, निश-दिन घटता जाय।
धरती पर ज़िन्दा रहूँ, ऐसा करो उपाय।।

करुणा, भक्ति, भावना, सब कुछ लगता झूठ।
मुझसे मेरी धार ही, आज रही है रूठ।।

बहती गाती माँ चली, सागर तट की ओर।
भवसागर में गिर गई, बचा न कोई छोर।।

नयनों में अब बह रहा, माँ गंगा के नीर।
क्या शिव जी अब आएँगे, हरने उसकी पीर।।

जब गंगा में रहे ना, गंगाजल का अंश।
जीव-जन्तु मिट जाएँगे, मिटे मनुज का वंश।।

आज हिमालय कह रहा, मेरी सुनो पुकार।
करो प्रदूषण मुक्त जल, बचा रहे श्रृंगार।।

सावन-भादो से कहे, मेघ गए किस देश।
अकुलाया सारा चमन, मुरझाया परिवेश।।

बंदर, हाथी, रीछ संग, कहें शेर, लंगूर।
जल-क्रीडा कैसे करें, सपनें चकनाचूर।।

दादुर, सारस और बक, पपिहा, कागा, मोर।
तरस रहे जल के लिए, मचा रहे हैं शोर।।

जल की रानी मछलियाँ, मगरमच्छ औ' साँप।
दूषित जल सब हो गया, सभी गए हैं भाँप।।

हालत पतली हो गई, सब जीवों की आज।
निर्मल जल को ढूँढ़ते, गंगा में गजराज।।

पशु-पक्षी और जीव सब, बिन पानी बैचैन।
बूँद-बूँद जल ढूँढ़ते, अश्रु भरे हैं नैन।।

माँ गंगा के घाट पर, शिव भक्तों की भीड़।
हर-हर गंगे नाम सुन, मुदित हुए खग नीड़।।

गंगा-सागर तक गई, गोमुख से यह धार।
लुप्त कहीं हो जाए ना, मिलकर करो सुधार।।

गंगा-सागर तक रहे, गंग प्रदूषण मुक्त।
निस-दिन चिन्तन कीजिए, समय यही उपयुक्त।।

नया जागरण लाएँगे, शहर-गाँव में आज।
शुद्ध नीर बच जाएगा, पूर्ण होय सब काज।।

निगल रहा माँ गंग को, नित्य प्रदूषण नाग।
मुक्ति, गंगा को दिला, सो मत मानव जाग।।

हवा लिए दुर्गन्ध अब, गंगा को झुलसाय।
दूषित तन-मन देखकर, बेचारी अकुलाय।।

नीला अम्बर कर रहा, गंगा माँ से बात।
दूषित कितना हो गया, माँ अब तेरा गात।।

गंग मुक्ति का चल रहा, एक नया अभियान।
रहे प्रदूषण ना कहीं, इसके मिटें निशान।।

अब सूरज के ताप से, गंगा माँ अकुलाय।
ये भी अपनी अग्नि से, मेरा तन झुलसाय।।

संगम का वातावरण, कितना बदबूदार।
मिटे प्रदूषण कीजिए, कुछ तो बरखुरदार।।

माँ गंगा यूँ कह रही, अभी वक्त है शेष।
मेरी रक्षा जो करे, होगा वही अशेष।।

अपनी करनी का मनुज, तुझे मिलेगा दण्ड।
बिन जल तेरा होयेगा, जीवन खण्ड-विखण्ड।।

भीड़-भाड़ इतनी बढ़ी, भक्त हुए हैरान।
दूषित जल से कर रहे, गंगा में स्नान।।

सन्त सभी सहमत हुए, आए गंगा-द्वार।
मिलकर हम सब करेंगे, गंगा का उद्धार।।

कथनी-करनी का हमें, अन्तर करना दूर।
मिटा प्रदूषण दीजिए, गंगा जल को नूर।।

बिगड़ा है पर्यावरण; बिगडा़ प्रकृति विधान।
दूषित इसको कर रहे, धरती के इंसान।।

कौन प्रदूषित कर रहा, गंग-यमुन का नीर।
उनको दो चेतावनी, माँ की हर लो पीर।।

युगों-युगों से दे रहा, धरती को सुख चैन।
मौन तपस्वी-गंग जल, अब क्यों है बेचैन।।

आँधी, तूफ़ां सब सहे, नित मौसम की मार।
गंगा जल पर कर रहा, मूरख मानव वार।।

हिमगिरि से है कह रही, माँ गंगा की धार।
कैसे तू बच पाएगा, सूख रहा आकार।।

आज मनुज ने ही दिया, सबको कैसा रोग।
नदियाँ हैं पीड़ित सभी, कोई नहीं निरोग।।

गंगा तट पर कह रही, अब हरियाली तीज।
मानव तूने बो दिए, यहाँ विषैले बीज।।

पचा गए शंकर सुनो! किया गया विषपान।
किन्तु प्रदूषण का गरल, कौन पिएगा आन।।

गंगा ज़ल से कर रही, मछली रानी बात।
किया प्रदूषण ने यहाँ, जीना दुर्लभ तात।।

कानों में पड़ते नही, कोयलिया के बोल।
मानव ने परिवेश में, ज़हर दिया है घोल।।

कोयलिया है कूकती, वृक्षों पर नित भोर।
गंगा दूषित मत करो, मचा रही है शोर।।

सब कुछ दूषित कर दिया, इस मानव ने आज।
घट जैसा चिकना हुआ, तनिक न आवे लाज।।

गंगोत्री हिमखण्ड अब, पल-पल घटता जाय।
नित्य प्रदूषण नाग अब, पग-पग सबको खाय।।

धरती माँ से कह रही, गंगा आज पुकार।
शुद्ध नही वातारण, कैसे होय सुधार।।

तीस वर्ष में लुप्त यह, होगा गोमुख धाम।
गंगोत्री हिमखण्ड यों, रोता सुबहो-शाम।।

ब्रह्मपुत्र रावी नदी, सतलुज, झेलम, व्यास।
सब कहती हैं रोक दो, जल का महाविनाश।।

जीवों के अस्तित्व को, अब खतरा है जान।
अपनी ढपली मत बजा, राग, दोष पहचान।।

तरह-तरह के देखिए, जीव-जन्तु मझधार।
इक-दूजे से कर रहे, जो आपस में तकरार।।

जोड़-तोड़ से यदि कहीं, बिगड़ा नदी मिजाज।
जीवों पर गिर जाएगी, बे-मौसम की गाज।।

जो जल के मर्मज्ञ हैं, हो उनका सत्कार।
जल बचाव की सीख ले, जग में करो प्रचार।।

नदी-नदी का जानते, कुछ मर्मज्ञ मिजाज।
उनका मत भी लीजिए, होंगे पूरे काज।।

ऋषि-नगरी तक देखिए, गंगा रूप अनूप।
उससे आगे हो गया, माँ का रूप कुरूप।।

जहाँ गंग जलधार थी, वहाँ उड़ रही धूल।
फूलों के स्थान पर, वहाँ उग रहे शूल।।

पीछे हटते जा रहे, गंगोत्री हिमखण्ड।
खुद जाकर अनुभव करो, नाम मात्र की ठण्ड।।

कुछ दशकों में देखिए, ताप यहाँ बढ़ जाय।
पहले निर्मल धार थी, अब सूखा मुख बाय।।

गंगा-तट पर थे कभी, कस्तूरी मृग खूब।
मगर प्रदूषण से हुई, तट से गायब दूब।।

ऊँचे पर्वत शिखर पर, थे पक्षी मोनार।
ढूँढ़े से मिलते नहीं, पंछी अब दो-चार।।

ऊँचाई पर थे जहाँ, भोजपत्र के थान।
भोजपत्र, द्रुम लुप्त हैं, सब कुछ है वीरान।।

बद से बद्तर हो गया, गंगा तट का हाल।
मुर्दे, तट पर अधजले, रहे नदी में डाल।।

माँ गंगा के तटों पर, तीरथ धाम अनेक।
किन्तु प्रदूषण से घिरा, रोता आज हरेक।।

अब ऐसी पूजा करो, गंगा होय पवित्र।
कहीं प्रदूषण रहे ना, स्वच्छ रहें तटचित्र।।

कहीं-कहीं पर छाँव है, और कहीं पर धूप।
सूख रही जलधार है, सूख गए जल कूप।।

हरियाली को खा गया, पतझड़ का संताप।
ठौर ठिकाना ढूँढते, पशु-पक्षी चुपचाप।।

कल-कल अब करती नहीं, माँ गंगा की धार।
प्यासे तरुवर हैं खड़े, देवदार, कचनार।।

मिलती है तट पर कहाँ, माँ गंगा के छाँव।
प्यासे खग-मृग विचरते, प्यासे रहते गाँव।।

पूरी धरती तप रही, तपा रहा इंसान।
भू संग नदियों को यही, बना रहा वीरान।।

यहाँ प्रदूषण बढ़ रहा, जन-जन है बीमार।
कौन बचाएगा भला, गंगा की जलधार।।

गंगा जी से नित मिले, सूरज संध्या काल।
माँ से कहता दुःखी हो, "मन्द हो गई चाल"।।

बहती नित-नित पवन की, कौन सुने फ़रियाद।
आज मनुज ने कर दिया, सब कुछ है बरबाद।।

पहले जैसा रहा नहीं, बुद्धि और विवेक।
नीर-प्रदूषण बढ़ रहा, कर्म करो कुछ नेक।।

लहर-लहर हर लहर से, कहती दुखड़ा रोय।
मन कुण्ठित यह सोचकर, अश्रु न पोंछे कोय।।

मानसून आता नहीं, अब गंगा के घाट।
सूने-सूने शहर हैं, सूने हैं हर पाट।।

अब हर ऊँचे शिखर के, पत्थर कहते रोय।
हरियाली को भला अब, राखे कौन संजोय।।

जल को लेकर यदि मचा, जग में हाहाकार।
मानव ही कर उठेगा, मानव का संहार।।

भरा प्रदूषण हृदय में, तन में क्रोध अपार।
फिर मानव कैसे करे, माँ गंगा को प्यार।।

मन को निर्मल कर मनुज, फिर गंगा का नीर।
सफल मनोरथ हों सभी, मत हो अधिक अधीर।।

वृक्ष सभी यह सोचते, कहाँ गया नद-नीर।
बिन जल हम भी सूखते, फूट गई तक़दीर।।

भजन-कीर्तन कीजिए, रक्खो इतना ध्यान।
दूषित गंगा होए ना, बचा रहे सम्मान।।

मिलजुल कर यदि लग गए, होगी पूरी आस।
जन-जन प्यासा रहे ना, हो ना कोई निराश।।

गंगा माँ के साथ पावन नदियाँ होय।
यदि अब भी जागे जीवन भर फिर रोय।।

जन-जन तक पहुँचाएँगे, आज यही सन्देश।
गंगाजल निर्मल रहे, होगा काम विशेष।।

आओ मिलकर सब करें, एक नया संकल्प।
ठान लिया मन में अगर, होंगे पूर्ण विकल्प।।

सूना-सूना सा लगे, गंगा का सिंगार।
पीड़ा से अनजान बन भक्त करें जयकार।।

दुख देकर सुख भोगते, माँ अब तेरे लाल।
बेटे कैसे हो गए, माँ को यही मलाल।।

गंगा रक्षा के लिए, शुरू हुआ बलिदान।
माँ की रक्षा के लिए, त्याग दिए हैं प्राण।।

गंगा सतसई सार

गंगा मैया मन बसी, बहती निर्मल धार।
गंगा माँ की गोद में, सुख-समृद्धि अपार।।

घाट-घाट पर लिखेंगे गंगा माँ की पीर।
जो माँ की रक्षा करे, होगा वह बलबीर।।

गंगाजल अमृत भया, जल जीवन का सार।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, अविरल बहती धार।।

जब से गंगा आ गई, मेरे मन के द्वार।
मन-मन्दिर में छा गई, श्रद्धा, भक्ति अपार।।

पहले माँ को नमन कर, फिर कर लो सुस्नान।
साँस-साँस हर लहर से, पाती जीवन-दान।।

धूप-दीप और फूल-फल, करना माँ को भेंट।
मनोकामना पूर्ण हो, श्रीचरणों में लेट।।

गंगातट पर आ रहे, जो भी संत-महंत।
हर-हर गंगे बोलते, मिलकर कोटिक संत।।

पग-पग पर गूँजें सदा, जल पर मीठे बोल।
जल, जीवन का देवता, जल ही है अनमोल।।

पावनता का केन्द्र है, उत्तराखण्ड चहुँ ओर।
कण-कण उत्तराखण्ड का, करता भाव-विभोर।।

उद्गम गंगा-यमुन का, हिमगिरि देव महान।
बद्री और केदार की, अजब अनोखी शान।।

चार धाम में हो रही, सुरगण जय-जयकार।
सबको पावन कर रहे, त्रिपथा गंगाद्वार।।

मैं तो अज्ञानी भया, ज्ञानवान गुरु होय।
गंगा रक्षा के लिए, बीज दिए मन बोय।।

चिदानन्द स्वामी भये, परमारथ अवतार।
गंगा माँ का करेंगे, मुनिवर ही उद्धार।।

गुरुवर के आशीष से, लिखी गंग की पीर।
पावनतम हो जाएगा, गंगा माँ का नीर।।

जय-जय गंगा मात की, जय-जय भोले नाथ।
प्रभु! गंगा महिमा लिखी, खूब निभाया साथ।।

हे गंगे मैया करो, सबका बेड़ा पार।
जो माँ की रक्षा करे, उसको करना प्यार।।

मेरे भारत देश की, गंगा माँ है प्राण।
युगों-युगों से कर रही, यह जग का कल्याण।।

गंगावतरण

सूर्यवंश में हो गए, राजा सगर महान।
इच्छा मन में धारते, होय जगत कल्याण।।

धर्म-कर्म से धन्य था, राजा का दरबार।
राज-काज में निपुण थे, शासक-पहरेदार।।

शिव की महिमा है अजब, किया बड़ा उपकार।
सगर भूपति के हुए, बेटे साठ हज़ार।।

कालचक्र चलता रहा, पल-पल अपनी चाल।
राजा सगर की अक्ल पर, फैलाया इक जाल।।

अवश्मेघ यज्ञ करेंगे, राजन करें विचार।
सारंग यज्ञ का छोड़कर, हुए सभी तैयार।।

राजन की यह कामना, यज्ञ पूर्ण हो जाय।
इन्द्रदेव ने छल किया, घोड़ा दिया छिपाय।।

कपिल मुनि के द्वार पर, पहुँचे पुत्र हज़ार।
सगर सुतों ने किया नहीं, मुनिवर का सत्कार।।

सगर सुतों ने दंभ में किया भंग मुनि-जाप।
भस्म सभी सुत हो गए, पाकर मुनिवर श्राप।।

कैसा विधि-विधान है, बचा न कोई शेष।
भस्मी ढेरों में छिपे, सगर-पुत्र अवशेष।।

सुधि जनों से पूछते, राजन मुक्ति उपाय।
क्या सोचा, क्या हो गया, सगर रहे पछताय।।

पुत्रों की भस्मी पड़ी, कपिल मुनि के द्वार।
ऋषिवर से विनती करें, राजन बारम्बार।।

मुनिवर हमें बताइये, किस विध मुक्ति होय।
भस्मी के अम्बार को, देख-देख मन रोय।।

देवलोक से माँ गंगा, मृत्युलोक में आय।
पुत्रों को मुक्ति मिले, जन्म सफल हो जाय।।

अंशुमान ने तप किया, गंगा भू पर आय।
गंग-धार आई नहीं, राजन मन अकुलाय।।

सगर-वंश में हो गए, राजा दलीप कुमार।
राजा के यहाँ सुत हुए, भगीरथ सुकुमार।।

शिव-भक्ति आराधना, करें भगीरथ जाप।
पुरखों का उद्धार हो, दूर होय संताप।।

त्याग, तपस्या से मिला, शिवजी का वरदान।
पुरखों को मुक्ति दिला, करते शिव गुणगान।।

जप-तप से खुश हो गए, शिव शंकर भगवान।
गंगा भू पर आएगी, करने जन कल्याण।।

शिव ने गंगा से कहा- गंग धरा पर जाओ।
पुरखों का उद्धार कर सबका मन हरषाओ।।

शिव-आज्ञा को धारकर, गंगा भू पर आय।
जड़-जंगम हर्षित हुए, राजा खुशी मनाय।।

गंग शीश पर धारकर, गंगाधर कहलाय।
गंगाधर की जटाओं में, माँ मंद-मंद मुस्काय।।

देवलोक से आ गई, मृत्युलोक गंगधार।
शिव-शक्ति की देखिए, महिमा अपरम्पार।।

गंग, भगीरथ ले चले, जहाँ सुत साठ हज़ार।
मुक्ति पुरखों की हुई, किया गंग उपकार।।

अमर भगीरथ हो गए, गंगा भू पर आय।
जन-जन को जीवन दिया, देव सभी हर्षाय।।

एक और दृष्टांत में, मिला गंग को श्राप।
मृत्युलोक में भोगिए, जाकर ये अभिशाप।।

ब्रह्मा, के अभिशाप में, गंगा भू पर आय।
करनी का फल भोगना, वह मन में पछताय।।

शान्तनु संग में बँध गई, माँ गंगा की डोर।
सात पुत्र पैदा हुए, दिए सभी गंग छोर।।

देवव्रत सुत आठवाँ, शेष बचा न कोय।
वही देवव्रत भविष्य में, भीष्म पितामह होय।।

महाभारत के युद्ध में वीरों को समझाय।
भीष्म-प्रतिज्ञा धारकर, जग में यश फैलाय।।

जब अर्जुन को युद्ध में, भीष्म रहे भगाय।
कृष्ण सुदर्शन चक्र को, लेकर दौड़ लगाय।।

इच्छा-मृत्यु का मिला, भीष्म को वरदान।
कौरव-पाण्डवों को दिया, भीष्म ने सद्ज्ञान।।

शर-शैया पर लेटकर, दिया ज्ञान उपदेश।
धर्मशास्त्र मर्मज्ञ थे, नीति-नियम विशेष।।

अर्जुन के इक तीर से, निकली भू जलधार।
प्यास बुझाई भीष्म की, किया सभी को प्यार।।

जीवन भर ब्रह्मचर्य का, व्रत लिया था धार।
युगदृष्टा ने जगत में, सदा किया उपकार।

जब तक सूरज-चाँद का, रहे जगत में नाम।
भीष्म पितामह को करे, सारा जग प्रणाम।।

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश : एक दृष्टि में

मुख्य परिसर :-

परमार्थ निकेतन का परिसर लगभग एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में स्थित है। ऊँचे–ऊँचे पर्वत शिखरों के चरण तल व परम–पुनीत गंगाजी की पावन गोद में बसे इस आश्रम की दिव्यता यहाँ के कण–कण में परिलक्षित होती है। यह आश्रम कई मूर्धन्य ऋषि–मुनियों की पावन तपस्थली है। एक हजार से अधिक कक्षों वाले आश्रम की स्थापना वर्ष 1942 में तपोनिष्ठ सन्त परम पूज्य स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने एक कुटिया से की। आश्रम स्वामी शुकदेवानन्द ट्रस्ट द्वारा संचालित है, जिसकी विधिवत स्थापना 1962 में हुई। ट्रस्ट के चेयरमैन महामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी असंगानन्द सरस्वती जी हैं तथा प्रबन्ध न्यासी पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी हैं।

ट्रस्ट का मुख्यालय परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में दिव्य गंगातट पर स्थित है। परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती मुनि जी हैं। यहाँ के कार्यक्रमों में गंगा, गायत्री व गौ की त्रिविध–धारा प्रवाहित होती है। यहाँ देश–विदेश के ढाई से तीन हजार नर–नारी प्रतिदिन आते हैं।

परमार्थ में विभिन्न आध्यात्मिक व सामाजिक गतिविधियाँ नियमित रूप से चलाई जाती हैं। प्रातः 5 बजे से होने वाली सामूहिक प्रार्थना, पूर्वान्ह्काल व अपरान्ह्काल दो बार प्रेरक सत्संग, गौशाला संचालन आदि ने इसकी दिव्यता व रचनात्मकता से अनेक को जोड़ा है। आश्रम के मुख्य द्वार पर स्थित गंगा आरती स्थल विश्व भर में ख्याति प्राप्त कर चुका है। इस स्थल ने डिस्कवरी चैनल पर दिखाए जाने वाले विश्व–पटल पर स्थान पाया है। दुनिया में भारत और भारत में गंगा तथा गंगा–आरती कराते परमार्थ निकेतन आश्रम के परमाध्यक्ष श्रद्धेय मुनि जी की झलक वैश्विक स्तर पर

डिस्कवरी चैनल के दर्शक देखते हैं। यहाँ पर रोज गोधूलि–बेला में यज्ञ के उपरान्त बड़ी भव्य व दिव्य सामूहिक गंगा आरती होती है, जिसमें 500 से 1000 देशी–विदेशीजन भाग लेते हैं। पूज्य स्वामी चिदानन्द जी के सान्निध्य एवं प्रेरणा से गंगौत्री, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, ज्वालापुर, वाराणसी, इलाहाबाद (प्रयाग) बिठूर (कानपुर), काठमाण्डू आदि स्थानों पर भी नियमित गंगा–आरती आरम्भ हुई है। उधर धर्मनगरी हरिद्वार में गंगा महासभा के तत्वावधान में हर की पैड़ी की गंगा आरती की ख्याति तो सर्वविदित है ही।

भागीरथी माँ गंगाजी सहित देश की प्रमुख नदियों के संरक्षण अर्थात् समग्र पर्यावरण संरक्षण के अलावा शिक्षा–विद्या विस्तार, योग विज्ञान विस्तार, नारी स्वावलम्बन, युवा जागरण, संस्कार संवर्द्धन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जैविक खेती, ग्राम्य विकास, कूड़ा प्रबन्धन, सर्वधर्मसमभाव, दैवी आपदा सहायता, आदर्श ग्रामों का निर्माण, हिन्दुत्व के दुर्लभ एवं नितान्त अछूते पक्षों पर शोध एवं विस्तार इत्यादि समाज निर्माण व राष्ट्र निर्माण के कई कार्यक्रम यहाँ से चलाये जाते हैं।

पूज्य स्वामी के सान्निध्य में गंगा एक्शन परिवार एवं यमुना एक्शन परिवार की स्थापना की गयी है। इस परिवार की मुखिया माता गंगा और माता यमुना है, शेष सभी जन गंगासेवक व यमुनासेवक हैं। गंगा प्रेमी व यमुना प्रेमी युवक–युवतियों के अलावा जल व कृषि से जुड़े वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, पर्यावरणविदों, कृषक दलों, किसानों, महिला मण्डलों आदि ने इन नदियों की स्वच्छता, निर्मलता और अविरलता के लिए कमर कसकर काम शुरू कर दिया है।

आश्रम में स्थित अध्यात्म संस्कृत महाविद्यालय और परमार्थ गुरुकुल संस्कृत, संस्कृति, विज्ञान व अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं के अद्भुत सामंजस्य वाले आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान हैं। परमार्थ परिवार ने ऋषिकेश के बाहर भी कई गुरुकुलों की स्थापना की है। प्राचीन व आधुनिक शिक्षण व्यवस्था के अद्भुत सामंजस्य वाले ये गुरुकुल सभी के आकर्षण का केन्द्र

हैं। इन शिक्षण संस्थानों में हजारों विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं। संस्कारयुक्त शिक्षा इन गुरुकुलों की विशेषता है।

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय हित के विभिन्न मुद्दों पर यहाँ गम्भीर चिन्तन–मन्थन का दौर नियमित रूप से चलता है। तीन विशाल सभागृहों में आयोजित सेमिनारों व कार्यशालाओं में सभी क्षेत्रों, वर्गो, राष्ट्रों के मान्य विद्वान पधारते हैं, सहयोग करते हैं। आश्रम का सभी प्रमुख आध्यात्मिक व सामाजिक संस्थाओं से प्रभावी समन्वयन है।

आश्रम में विशिष्ट ध्यान–साधनाओं के शिविर समय–समय पर होते हैं, जिनमें समाज के प्रबुद्ध व मान्य व्यक्ति भी बड़ी संख्या में भागीदारी करते हैं। देश–विदेश की प्रमुख आध्यात्मिक संस्थाएँ भी अपने प्रतिनिधियों को यहाँ लाकर उन्हें ऐसे शिविरों का लाभ दिलाती हैं।

आश्रम के मुख्य द्वार के समीप गंगा–तीरे पाँच से सात हजार की क्षमता वाले विशाल सभा–स्थल पर समय–समय पर ख्यातिप्राप्त विद्वान वक्ताओं के प्रवचन व कथाओं के आयोजन होते हैं। उधर मुख्य परिसर में स्थित प्रवचन हाल में योग कक्षाओं के अलावा उद्‌बोधन–मार्गदर्शन संगोष्ठियों का क्रम प्रतिदिन चलता है। एलोपैथिक स्वास्थ्य सेवा के अलावा प्राकृतिक चिकित्सा व योग चिकित्सा यहाँ के परमार्थ चिकित्सालय की विशेषता है। यहाँ निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के आयोजन समय–समय पर होते हैं। समग्र ग्रामीण विकास के अलावा, युवाओं हेतु सिविल सर्विस प्रशिक्षण एवं पुलिस के प्रशिक्षण प्रोग्राम भी शुरू किए गए हैं।

विश्व के लगभग सभी देशों के प्रतिनिधि यहाँ नियमित रूप से पधारते व शिक्षण लेते हैं और वापस जाकर भारतीय संस्कृति की उन धाराओं का प्रसार, मौन साधक की भूमिका में करते हैं। ये विदेशी भक्त / साधक अधिकांशतः उन देशों के मूल निवासी होते हैं। आश्रम में पाँच सौ से अधिक व्यक्ति तीन समय निःशुल्क भोजन प्रसाद ग्रहण करते हैं, यहाँ

डेढ़ सौ से ज्यादा स्वयंसेवक व कार्यकर्ता अनवरत सेवा में संलग्न है। इनकी सेवा भावना, दायित्व बोध, तत्परता, सूक्ष्मदृष्टि–सर्वदृष्टि, पारदर्शिता आदि अनुकरणीय हैं।

ट्रस्ट के मुख्य सेवा केन्द्रः-

1. परमार्थ निकेतन, पो0 स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
2. परमार्थ आश्रम, भारत माता मन्दिर के सामने, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) (यह आश्रम धर्मनगरी हरिद्वार का प्रमुख सेवाश्रम है जो पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी के संरक्षण व मार्गदर्शन में समाज की सेवा कर रहा है)
3. परमार्थ मन्दिर, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली। (राष्ट्रीय राजधानी के हृदयक्षेत्र–संसद क्षेत्र में स्थित इस केन्द्र में 60 कक्ष हैं एवं तीन बड़े हॉल व देवालय है, इसे नेशनल सेण्टर के रूप में विकसित किया गया है।)
4. प्रकाश भारती आश्रम, शीशमझाड़ी, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)

अन्य सम्बन्धित संस्थाएँः-

5. परमार्थ ज्ञान मन्दिर, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
6. परमार्थ लोक, बद्रीनाथ, जिला चमोली (उत्तराखण्ड)
7. मुमुक्ष आश्रम, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)
8. एकरसानन्द आश्रम, मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)
9. आनन्द आश्रम, बरेली (उत्तर प्रदेश)
10. दैवी सम्पद मण्डल आश्रम, रायबरेली (उत्तर प्रदेश)
11. हरिधाम आश्रम, बिठूर, जिला·कानपुर–देहात (उत्तर प्रदेश)
12. श्रीकृष्ण आश्रम, बृजघाट–गढ़मुक्तेश्वर, जिला पंचशीलनगर (हापुड़–उ0प्र0)

13. परमार्थ निकुंज, बांके बिहारी कालोनी, वृन्दावन, जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश)
14. राधा माधव कुटी, वृन्दावन, जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश)
15. स्वामी शुकदेवानन्द आश्रम, रेनूकूट, जिला सोनभद्र (उत्तर प्रदेश)
16. दैवी सम्पद मण्डल आश्रम, राजिम, जिला रायपुर (छत्तीसगढ़)
17. गोपाल आश्रम, फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)
18. स्वामी एकाक्षरानन्द आश्रम, बिरारी, जिला इटावा (उत्तर प्रदेश)
19. परमार्थ वाटिका/हर्बल गार्डेन, हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)
20. आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी केन्द्र, लक्सर, जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
21. आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी केन्द्र, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)
22. आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी केन्द्र, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
23. आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी केन्द्र, भोपाल (मध्य प्रदेश)
24. गौ. गंगा एवं ग्राम शोध केन्द्र, वीरपुर, ऋषिकेश (प्रस्तावित)

इस तरह के अन्य सेवाकेन्द्र भी कई स्थानों पर प्रस्तावित हैं।

संस्कार केन्द्र : शिक्षा-विद्या विस्तार-

यूथ एजूकेशन सर्विसेज (YES) प्रोग्राम के अन्तर्गत ऋषिकेश के मुख्य परिसर स्थित दैवी सम्पद संस्कृत महाविद्यालय एवं अन्य गुरुकुलों के अलावा स्वर्गाश्रम, उत्तरकाशी, लखनऊ, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु एवं सुनामी प्रभावित क्षेत्र कडलून में हजारों छात्र–छात्राएँ अध्ययनरत हैं। भारत के अन्य हिमालयीय जिलों एवं उत्तर–पूर्व राज्यों में परमार्थ से सम्बन्धित कई शिक्षण संस्थान सेवारत हैं। इन गुरुकुलों में चरित्र–निर्माण एवं देश–भक्ति की भावनाएँ नयी पीढ़ी में कूट–कूटकर भरी जाती है। परमार्थ गुरुकुल के छात्रों को 'ऋषि–कुमार' सम्बोधित किया जाता है।

विदेशों में परमार्थ :-

पूज्य स्वामी शुकदेवानन्द जी का सपना था कि पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का विस्तार हो और ऋषि परम्परा का प्रचार–प्रसार सभी स्थानों पर किया जाए। पूज्य स्वामी चिदानन्द जी की प्रेरणा व प्रयासों से विदेशों में निम्नांकित प्रमुख सेवा केन्द्र स्थापित हुएः

०१. परमार्थ कैलाश– मानसरोवर आश्रम, मानसरोवर लेक, तिब्बत:-

पाँच से आठ पलंगों वाले 25 कक्षों एवं 02 विशाल प्रवचन सभागारों वाले इस आश्रम में मानसरोवर यात्री ठहरते हैं तथा यहाँ की आध्यात्मिक व सामाजिक सेवाओं का लाभ उठाते हैं। देश–विदेश के लब्ध–प्रतिष्ठित चिकित्सक यहाँ मैडिकल कैम्प भी लगाते हैं। आश्रम ने तिब्बती लोगों को स्वावलम्बी जीवन का सुन्दर वातावरण दिया है। तिब्बती स्वजन ही आश्रम का संचालन करते हैं और आसपास के क्षेत्रों में शिक्षा व स्वास्थ्य सहित कई गतिविधियाँ चलाते हैं। विदेशी धरती पर प्रथम परमार्थ आश्रम के रूप में इस सेवा–केन्द्र की शुरूआत वर्ष–2000 में हुई।

०२. परमार्थ मानसरोवर आश्रम, प्रयाग, तिब्बत :-

यात्री मानसरोवर लेक पहुँचने के पूर्व की रात्रि में इस आश्रम में विश्राम करते हैं। एक से तीन शैयाओं वाले 30 कक्ष तथा सत्संग व ध्यान आदि में प्रयुक्त होने वाली 02 डारमेट्री दुनिया भर से, विशेष रूप से भारत से पहुँचे तीर्थयात्रियों की नियमित सेवा करती है। वर्ष–2003 में आरम्भ इस आश्रम में तीर्थो एवं तीर्थयात्राओं के मर्म व महत्व से सभी यात्रियों को परिचित कराया जाता है।

०३. परमार्थ कैलाश–मानसरोवर आश्रम, दिरापुक, तिब्बत/चीन :-
भगवान शिव के निवास स्थल कैलाश मानसरोवर की परिक्रमा के मुख्य पथ

पर 17 हजार फीट की ऊँचाई पर वर्ष–2006 में स्थापित यह आश्रम मानसरोवर यात्रा के आरम्भ–स्थल से 20 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यात्री पहली रात्रि का विश्राम इसी परमार्थ आश्रम पर करते हैं। दोमंजिले 50 कमरों, भोजनालयों एवं प्रवचन सभागार आदि से सुसज्जित इस आश्रम से सीधा व सुस्पष्ट कैलाश दर्शन होता है। सभी कक्ष माउण्ट कैलाश की ओर खुलते है, जिससे हर कमरे में पवित्र कैलाश की दिव्यता का आभास होता है। इस आश्रम की दिव्यता और रमणीकता अवर्णनीय है। यहाँ का बौद्ध समाज परमार्थ निकेतन ऋषिकेश की इन सेवाओं के लिए देवभूमि उत्तराखण्ड के इस आध्यात्मिक सेवा संस्थान के प्रति हृदय से कृतज्ञ हुआ है।

०४. हिन्दू-जैन मन्दिर, मनरोविल-पिट्सवर्ग, पेंसिलवेनिया, यूएसए :-

तीन नदियों के संगम वाली धरती पिट्सवर्ग अमेरिका में पूज्य स्वामी जी के निर्देशन में 1980 में निर्मित व संचालित यह सेवा–केन्द्र अपने–आप में एक अनूठा व पहला प्रयास है। हिन्दू धर्म एवं जैन परम्परा के श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय के लोग यहाँ एक साथ मिलकर पूजा–सत्संग करते हैं और समन्वय भाव से रहते हुए लोक कल्याण के कार्यो में रत हैं।

०५. विश्वनाथ मन्दिर सिडनी, आस्ट्रेलिया :-

आस्ट्रेलिया का यह केन्द्र बहुत ही महत्वपूर्ण सेवा संस्थान है। यह संस्थान पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा प्रेरित एवं संस्थापित है।

एक युगीन कार्य : इन्साइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दुइज्म :-

पूज्य स्वामी चिदानन्द जी की प्रेरणा से उनके नेतृत्व में युगपुरुष

स्वामी विवेकानन्द से संप्रेरित हिन्दुत्व और प्रकारान्तर से मानवता के हित में एक बहुत बड़ा काम प्रभुकृपा से सम्पन्न हुआ है। परमार्थ निकेतन को 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दुइज्म' के पुण्य–प्रकाशन का श्रेय मिला है।

विश्व के प्रमुख सभी धर्मो के इन्साइक्लोपीडिया उपलब्ध हैं, हिन्दू धर्म के क्षेत्र में इस पर काम नहीं हुआ था। भारतीय संस्कृति व हिन्दू धर्म से जुड़े विश्व भर के एक हजार से ज्यादा मान्य विद्वानों, प्रोफेसरों व वैज्ञानिकों ने 1987 से 2009 के मध्य पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन में यह अद्वितीय भागीरथ पुरुषार्थ सम्पन्न किया। कुल 60 लाख शब्दों और 7000 एन्ट्रीज वाले कई खण्डों के इस महाग्रन्थ में 12 मुख्य विषय क्षेत्र शामिल किए गए हैं, जो न केवल हिन्दुत्व वरन् समस्त मानवता के हितार्थ विश्ववासियों को समर्पित हैं। भारत के 121 करोड़ नर–नारियों और दुनिया भर में फैले करोड़ों भारतवासियों के लिए पूज्य स्वामी जी की यह अनुपम भेंट है।

इन्साइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दुइज्म, हरिद्वार महाकुम्भ–2010 में प्रख्यात धर्मगुरु पूज्य दलाईलामा एवं विश्व सन्त–समुदाय तथा देश–विदेश के अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की पावन उपस्थिति में प्रकाश में आया। अभी यह महाग्रन्थ अंग्रेजी में उपलब्ध है, भविष्य में इसे हिन्दी एवं अन्य देशी–विदेशी भाषाओं में उपलब्ध कराये जाने का प्रस्ताव है। हमारे बच्चों, उनके बच्चों और उनके बाद आने वाली सारी पीढ़ियों को परमार्थ निकेतन की यह अमूल्य भेंट इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में विश्व परिवार को सप्रेम समर्पित है।

महान सन्तों, महापुरुषों, अन्तर्राष्ट्रीय हस्तियों का सहयोग :–

परमार्थ के समन्वयवादी दृष्टिकोण और सबको साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति के फलस्वरूप भारत एवं देश के बाहर के अनेक सन्त, महापुरुष तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कई प्रमुख हस्तियाँ यहाँ के विविध कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग प्रदान करती है। इनमें बौद्ध धर्मगुरु पूज्य दलाईलामा, पू.

श्रीश्री रविशंकर, पू.स्वामी रामदेव, पू.स्वामी सत्यमित्रानन्द सरस्वती, पू. स्वामी दयानन्द सरस्वती, पू.स्वामी गुरुशरणानन्द, पू.स्वामी अवधेशानन्द सरस्वती, पू.जग्गी वासुदेव, पू.मोरारी बापू, पू.रमेश भाई ओझा, पू.गोस्वामी इन्दिरा बेटी, पू.दादा जे.पी. वासवानी, श्री बी.के.एस. आयगर, आचार्य लोकेश मुनि, मौलाना वहीदुद्दीन खान साहब, इमाम उमर अहमद इलियासी साहब सहित अन्य सभी धर्मो के सम्मानित महापुरुष शामिल होते रहे हैं।

सर्वधर्मसमभाव और विश्व–मानवता की एकजुटता की दिशा में परमार्थ निकेतन के प्रयासों का समर्थन विभिन्न धर्मो–सम्प्रदायों के प्रमुख व्यक्तियों ने किया है। पूज्य स्वामी जी की सम–दृष्टि के फलस्वरूप भारत के अलावा विदेशों के अनेकों नामी–गिरामी अध्यात्मवेत्ताओं, राष्ट्राध्यक्षों, शासनाध्यक्षों आदि का सक्रिय सहयोग परमार्थ परिवार को निरन्तर मिलता है। यह सेवाश्रम युग निर्माण तथा विचार क्रान्ति के युगीन आन्दोलन का प्रबल समर्थक है, जिसकी झलक यहाँ की सेवाभावी गतिविधियों एवं क्रिया–व्यवहारों में देखने को मिलती है।

राजतन्त्र व शासनतन्त्र का सम–सामयिक मार्गदर्शन :-

परमार्थ का दृष्टिकोण समभाव एवं धर्म निरपेक्षवादी है। लोकहितकारी चिन्तन और विराट सोच के साथ परमार्थ द्वारा केन्द्र व राज्य सरकारों की जनहितकारी नीतियों के निर्धारण में यथासमय उचित परामर्श दिया जाता है। इस कार्य में विभिन्न विधाओं के प्रमुख विभूतिवान व्यक्ति अपना समय व सहयोग परमार्थ परिवार के समन्वयन में लोकहितार्थाय देते हैं। पूरी निष्पक्षता व निरपेक्षता के साथ विभिन्न राजनीतिक दलों की चिन्तन–कार्यशालाएँ परमार्थ परिसर में समय–समय पर सम्पन्न होती है, जिनसे निःसृत सद्चिन्तन सर्वसमाज के लिए कल्याणकारी होगा और इससे नए भारत व नए विश्व के निर्माण में अभूतपूर्व सहायता मिलेगी।

भारत के ग्रामीण, नगरीय अंचलों में सेवाभावी गतिविधियों का विस्तार :

परमार्थ ने देश के सभी राज्यों में आध्यात्मिक–सामाजिक गतिविधियों के विस्तार की अभिनव योजना बनायी है। इस कार्य का श्रीगणेश कर दिया गया है। यह सेवा कार्य सभी ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में चलाए जायेंगे। गतिविधियों के मूल में गंगा सेवा, नदी संरक्षण व पर्यावरण संरक्षण होंगे। गायत्री, गंगा व गौ को केन्द्र में रखकर इन सेवा गतिविधियों का मूलाधार आध्यात्म होगा और लक्ष्य होगा राष्ट्र–विश्व में एक अभिनव वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात।

भारतवर्ष के भाल देवभूमि उत्तराखण्ड की पावन नगरी ऋषिकेश के दिव्यता से परिपूर्ण परमार्थ निकेतन सेवाश्रम में, भागीरथी माँ गंगाजी की ओर से, आपका सपरिवार स्नेहपूर्ण आमन्त्रण है।

गंगा एक्शन परिवार

www.gangaaction.org.com
www.parmarth.com
Mob : 09411106609, 08859451425, 08979629429
Ph. 0135 - 2440011,
Fax : 00 91 135 - 2440066



इन्द्र प्रसाद 'अकेला'

जन्मतिथिः 10 जुलाई, 1963

पिता-माताः स्व. श्री फतेहसिंह एवं श्रीमती विद्यावती

जन्म-स्थानः गाँव ढ़िंढार, मुरादनगर क्षेत्र, तहसील मोदीनगर, जिला ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र) भारत।

सम्प्रतिः साहित्य, समाज व राष्ट्र-सेवा।

शिक्षाः एम. ए., एम. एड.

कर्मस्थलीः भारत सरकार रक्षा-मन्त्रालय, आयुध निर्माणी मुरादनगर, जिला ग़ाज़ियाबाद, उ.प्र. (भारत) में सेवाकार्य।

उपलब्धियाँः कक्षा पाँच की पाठ्य पुस्तक 'नीरांजना' में, 'सर्दी का मौसम' कविता, एन.सी.ई.आर.टी. लेवल पर आधारित पाठ्यक्रम में 2004 से शामिल। 50 से अधिक काव्य-कृतियों की भूमिका व समीक्षा। आकाशवाणी, दूरदर्शन, एन.डी.टी.वी इण्डिया, सब टी.वी., साधना टी.वी. जैन टी.वी. और ई.टी.वी. आदि से काव्य-पाठ। **अध्यक्ष**-आयुध निर्माणी कवि-मंच, मुरादनगर एवं साहित्य-सृजन समिति, मुरादनगर।

सम्मानः देश के अनेक मंचों से अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों में सम्मानित, साहित्य-मनीषी, काव्यश्री, हास्य-व्यंग्य सम्राट, भारतीय रत्न, डॉक्ट्रेट, साहित्य-सम्राट और हास्य-व्यंग्य बाण सम्मान से विभूषित।

काव्य-कृतियाँः एक पहेली भारत माँ, हुँकार, हँसी के रंग, अकेला के संग, हास्य-व्यंग्य फुलझड़ियाँ, गंगा माँ की पुकार आदि प्रकाशित।

सम्पर्कः काव्यांजलि, 19/397, डिफेंस कॉलोनी, रेलवे रोड, स्टेट बैंक के पास, मुरादनगर, जिला-ग़ाज़ियाबाद, उ.प्र. (भारत)

मोबाइल- +91-9457671705, 09897332021, 01232&225341

ईमेल- indraprasadakela@gmail.com

www.kaviindraprasadakela.blogspot.com



मोरपंख प्रकाशन

49-ए, न्यू फ्रेण्ड्स कॉलोनी, मेरठ (उ॰प्र॰)